

क्या कृषि नीति में बदलाव के बीज बो पाएगा बजट

उम्मीद है कि एक फरवरी को आने वाला बजट इस बार खेती को सिर्फ कल्याणकारी योजना न मानकर, इसे एक उत्पादक और तकनीकी-सक्षम क्षेत्र के रूप में विकसित करेगा।

बजट 2026 भारत की कृषि नीति में बदलाव के बीज बो सकता है। यह ऐसा क्षेत्र है जो भारत-अमेरिका व्यापार वातावरण में एक प्रमुख विवाद बिंदु बनकर उभरा है। खेती के मुद्दे पर ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पलटवार करने का फैसला किया। 7 अगस्त को दिल्ली में ट्रप द्वारा टैरिफ की घोषणा के एक दिन बाद, उन्होंने कहा कि भारत अपने किसानों, डेयरी

क्षेत्र और मछुआरों के कल्याण से कमी समझौता नहीं करेगा। अब सबकी निगाहें इस बात पर हैं कि सीतारमण अपने बही-खाते में भारत के अजन्दाताओं के लिए क्या खोलती है। क्या बजट 2026 केवल लेखा-जोखा संतुलित करेगा या घरेलू प्राथमिकताओं और वैश्विक व्यापार दबावों के बीच फंसे इस क्षेत्र के लिए किसी बड़े पुनर्निर्माण का संकेत देगा।



समय की आवश्यकता

कृषि क्षेत्र

संदर्भ डेटा

प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाएं

2050 तक भारत की जनसंख्या 1.6 अरब तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सतत विकास तथा एसडीजी लक्ष्यों के अनुरूप देश की कृषि निर्यात क्षमता को खोलना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेषज्ञ इस चुनौती से निपटने के लिए 4पी दृष्टिकोण की जरूरत बताते हैं।

प्रोड्यूस (उत्पादन): अनुसंधान एवं विकास में निवेश के जरिए अधिक उत्पादन

प्रोसेस (प्रसंस्करण): मूल्य संवर्धन और अवसंरचना के माध्यम से अधिक उत्पादन मूल्य

प्राइस (कीमत): कुशल आपूर्ति श्रृंखला और बेहतर मूल्य प्राप्ति के जरिए अधिकतम मूल्य

प्रोटेक्ट (संरक्षण): दीर्घकालिक स्थिरता के लिए संसाधनों की लचीली और टिकाऊ सुरक्षा

अधिक धन की संभावना

पिछले केंद्रीय बजट में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए आवंटन वित्त वर्ष 2025 में 1.52 लाख करोड़ और वित्त वर्ष 2026 में 1.37 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किया गया था, जबकि एमएसपी और इनपुट सब्सिडी सहित क्षेत्र पर वास्तविक प्रभावी व्यय 3.91 लाख करोड़ से अधिक रहा। अनुमान है कि इस क्षेत्र के लिए आवंटन में उत्तर की ओर बढ़त हो सकती है। अधिक आवंटन उभरते क्षेत्रों को प्रोत्साहन देगा और निर्यात लक्ष्यों, आत्मनिर्भरता, अनुसंधान एवं विकास तथा तकनीक-आधारित खेती को समर्थन प्रदान करेगा। यह बजट ऐसे समय में आ रहा है जब कृषि क्षेत्र सुस्ती के दौर से गुजर रहा है।

खाद्य सुरक्षा के लिए कदम

सरकार के राष्ट्रीय खाद्य तेल-तिलहन मिशन और आत्मनिर्भर दाल मिशन, आत्मनिर्भरता की स्पष्ट दिशा दर्शाते हैं। इसमें तिलहन के लिए 2030-31 तक 10,103 करोड़ रुपये का प्रावधान है। उत्पादन को 39 मिलियन टन से बढ़ाकर लगभग 70 मिलियन टन करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें 40 लाख हेक्टेयर धान-परती भूमि को तिलहन के तहत लाने की योजना शामिल है। इसी प्रकार 1,000 करोड़ के समर्थन वाले दाल मिशन का लक्ष्य 2027 तक चर्चिंत दालों में आत्मनिर्भरता हासिल करना है, जिसके तहत 126 लाख क्विंटल प्रमाणित बीजों का वितरण और 88 लाख मुफ्त बीज किट उपलब्ध कराई जाएंगी। बजट में इन प्रयासों को और मजबूत करना चाहिए, खासकर इसलिए क्योंकि भारत अभी भी अपनी खाद्य तेल आवश्यकता का लगभग 60% आयात करता है और दालों का भी बड़ा हिस्सा बाहर से लाता है। खाद्य और पोषण सुरक्षा की शुरुआत खेतों से होती है। भारतीय कृषि में पैमाना भी है और स्थायित्व भी। बजट 2026 यह तय करेगा कि सरकार पुरानी लकीरों पर ही हल चलाती रहेगी या इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर बड़ी फसल काटने में मदद करेगी।

परिवहन में सड़ते अरबों रुपये

मजबूत अनाज उत्पादन के बावजूद भारत में भंडारण और लॉजिस्टिक्स की कमी के कारण फल और सब्जियों जैसी वस्तुओं का 15% से 20% तक नुकसान हो जाता है। पीडीएस भी रिसाव, अवसंरचना की कमी और बर्बादी जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है। यह कृषि उत्पादकता के लिए बड़ी बाधाएं हैं। आगामी बजट में फसल कटाई के बाद प्रबंधन हेतु कोल्ड चेन, आधुनिक गोदाम, प्रसंस्करण इकाइयां और डिजिटल आपूर्ति-श्रृंखला प्रबंधन जैसी कृषि अवसंरचना में निवेश तेज किया जाना चाहिए। मूल्य स्थिरिकरण कोष (पीएसएफ) का विस्तार होना चाहिए। इसका उपयोग पहले से व्याज और दाल की कीमतों को स्थिर करने के लिए किया जा रहा है। अन्य सस्ती आवश्यक वस्तुओं जैसे दाल, आटा और चावल की उपलब्धता नेटवर्क को मजबूत करना, निम्न-आय वर्ग के लिए वहनीयता बनाए रखने में मदद करेगा।



खाद्य सुरक्षा

भारतीय कृषि एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है। एक ओर देश आत्मविश्वास के साथ स्वयं को वैश्विक खाद्य महाशक्ति, दुनिया के लिए एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता और कृषि विनिर्माण के केंद्र के रूप में स्थापित करने की बात करता है। दूसरी ओर फसल सुरक्षा, किसानों की स्थिरता और खाद्य मूल्य संतुलन की रीढ़ से जुड़ा नीतिगत पारिस्थितिकी तंत्र सक्रिय परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जैसे-जैसे केंद्रीय बजट 2026 नजदीक आ रहा है, यह समय अधिक स्पष्टता, विश्वास और विज्ञान-आधारित निर्णय प्रक्रिया के प्रति नए सिरे से प्रतिबद्धता का अवसर प्रदान करता है। पिछले वर्ष के दौरान फसल सुरक्षा पर सार्वजनिक विमर्श विशेष रूप से सक्रिय रहा है। कीटनाशकों पर अक्सर केवल जोखिम के दृष्टिकोण से चर्चा होती है, जबकि फसल हानि रोकने, किसानों की आय की रक्षा करने और खाद्य गुणवत्ता को नियंत्रित रखने में उनकी भूमिका पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। यह असंतुलन ऐसे समय में सामने आता है जब भारतीय किसान हर वर्ष कीटों, रोगों और खरपतवारों के कारण 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की फसलें खो देते हैं। यह ऐसी हानि है जिसे खाद्य सुरक्षा और निर्यात नेतृत्व की आकांक्षा रखने वाला कोई भी देश अनदेखा नहीं कर सकता।

कीटनाशक देश को खाद्य सुरक्षा देने में भी अहम फसल सुरक्षा के लिए स्पष्ट नियमों की दरकार

सही संतुलन की जरूरत

प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2025 का उद्देश्य भारत की नियामकीय रूपरेखा को आज की वास्तविकताओं के अनुरूप बनाना है। निगरानी को मजबूत करने, अनुपालन में सुधार लाने और किसानों व उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने का इरादा समयानुकूल और आवश्यक है। हालांकि, सभी बुनियादी सुधारों की तरह इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि इन उद्देश्यों को व्यवहार में कितनी प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है। इस दृष्टि से प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक को ऐसे बजट का पूरक समर्थन मिल सकता है, जो नियामकीय क्षमता, आधुनिक परीक्षण अवसंरचना और कुशल मूल्यांकन समारंभों को सुदृढ़ करे। ये कदम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि नई रूपरेखा सुरक्षित कृषि की ओर पुनर्गमन का काम करे। इसलिए बजट से फसल सुरक्षा क्षेत्र एक मजबूत आर्थिक वास्तविकता की स्पष्ट स्वीकृति चाहता है। अखिल में उपज की रक्षा करना उतना ही



महत्वपूर्ण है जितना उसका उत्पादन करना। इसलिए फसल सुरक्षा उत्पाद उत्पादकता बनाए रखने में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। उन्हें आवश्यक कृषि इनपुट के रूप में मान्यता देना कृषि लचीलापन और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में उनके योगदान को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करेगा। **किसान-केंद्रित सुधार होगा जीएसटी को तर्कसंगत बनाना** बजट की सबसे तात्कालिक अपेक्षाओं में से एक है फसल सुरक्षा उत्पादों पर जीएसटी को अधिकतम 5% तक तर्कसंगत बनाना, ताकि उन्हें अन्य उर्वरकों (बायोस्टिमूलेंट/जेविक उत्पादों) के समान स्तर पर लाया जा सके। ऐसा कदम किसानों पर लागत के दबाव को कम करेगा और उच्च गुणवत्ता वाले वैश्व उत्पादों की उपलब्धता बढ़ाकर जिम्मेदार उपयोग को प्रोत्साहित करेगा। इस दृष्टि से यह रियायत से अधिक एक किसान-केंद्रित सुधार है, जो कृषि मूल्य श्रृंखला में उत्पादकता, सुरक्षा और अनुपालन को मजबूत करता है।

विनिर्माण का अवसर

नए फसल सुरक्षा अणुओं के निर्माण के लिए लक्षित प्रोत्साहन लिंक्ड-इंसेंटिव (पीएलआई) ढांचा वैश्विक स्तर के निवेश आकर्षित करने, घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को गहरा करने और भारत को अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं में अधिक मजबूती से एकीकृत करने में मदद कर सकता है। यह केवल आयात प्रतिस्थापन का मामला नहीं, बल्कि वैश्विक बाजारों के लिए भारत को एक विश्वसनीय और प्रतिस्पर्धी उत्पादक के रूप में स्थापित करने का अवसर है।

नवाचार को वित्तीय समर्थन

फसल सुरक्षा नवाचार विज्ञान-प्रधान, पूंजी-आधारित और रचनात्मक रूप से दीर्घकालिक प्रक्रिया है। एक नए अणु के विकास में एक दशक से अधिक समय लग सकता है, जिसके लिए सतत निवेश और नियामकीय निश्चिन्ता आवश्यक है। यद्यपि भारत में विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को मान्यता देने में प्रगति की है, फिर भी कृषि अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तीय समर्थन को और मजबूत करने की गुंजाइश है। भारत फसल सुरक्षा को किसान लचीलापन, निर्यात वृद्धि और खाद्य सुरक्षा के लिए एक रणनीतिक साधन के रूप में सुदृढ़ कर सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वित्तीय और नियामकीय ढांचे राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा के अनुरूप आगे बढ़ें। लिया गया निर्णय न केवल उद्योग के परिणामों को प्रभावित करेगा, बल्कि भारत की कृषि अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक स्थिरता और प्रतिस्पर्धात्मकता को भी आकार देगा।

बजट से कंपनियों को बड़ी उम्मीद, अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने का खाका तैयार

बजट में इन सेक्टर पर फोकस बढ़ेगा तो बदलेगी ग्रोथ की तस्वीर लॉजिस्टिक कॉस्ट घटेगी, निवेश बढ़ेगा और रोजगार पैदा होंगे

इन्फ्रा

संदर्भ डेटा

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को आम बजट पेश करेंगी। इस बजट से भारतीय कंपनियों को कई बड़ी उम्मीदें हैं। उद्योगों से जुड़े विशेषज्ञों का कहना है कि केंद्र सरकार को इस बार बजट में इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, मैन्युफैक्चरिंग में वैल्यू एडिशन बढ़ाने, ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने और एमएसएमई सेक्टर को सस्ता और आसान कर्ज दिलाने पर खास फोकस करना चाहिए, ताकि लॉजिस्टिक कॉस्ट घटे और बिजनेस की रफ्तार बनी रहे। इंडस्ट्री के एक्सपर्ट्स का कहना है कि मौजूदा वैश्विक हालात में ग्रोथ बनाए रखने के लिए शॉर्ट टर्म राहत से ज्यादा जरूरी है कि अर्थव्यवस्था की बुनियाद को मजबूत किया जाए। कंपनियों का भरोसा बढ़ेगा व लंबे समय में देश की प्रतिस्पर्धा क्षमता भी बेहतर होगी।



भारत की स्थिति बेहतर

युनिया भर में कंपनियों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था पहले की तुलना में मजबूत स्थिति में है। इसकी वजह सरकार का पब्लिक इन्वेस्टमेंट पर लगातार फोकस, टैक्स सुधार और कंपनियों की बेहतर बैलेंस शीट है। अब चुनौती यह है कि इस मजबूती को लंबे समय तक टिकाऊ ग्रोथ में बदला जाए और मैन्युफैक्चरिंग व एक्सपोर्ट को और मजबूत किया जाए।

कम हुई लॉजिस्टिक कॉस्ट

पिछले एक दशक में सरकार ने सड़क, रेलवे और इन्फ्रास्ट्रक्चर में लगातार निवेश बढ़ाया है, जिससे कनेक्टिविटी बेहतर हुई है। वित्तवर्ष 18 से वित्तवर्ष 26 के बीच इन्फ्रास्ट्रक्चर पर बजट सपोर्ट करीब 12% सीएजीआर से बढ़ा है। इसका असर यह हुआ है कि देश की लॉजिस्टिक कॉस्ट घटकर अब करीब 7.97% रह गई है। चूंकि रेलवे सामान देने का सबसे सस्ता जरिया है, इसलिए बजट में रेलवे की क्षमता बढ़ाने और प्राइवेट सेक्टर के लिए कार्गो सुविधा बढ़ाने पर जोर जारी रहना चाहिए। इसके साथ ही सड़कों पर कैपेक्स बनाए रखते हुए हीओटी मैडल के जरिए निजी निवेश को भी बढ़ावा देना जरूरी है।

मैन्युफैक्चरिंग को मजबूत करने की जरूरत

भारत में मैन्युफैक्चरिंग का योगदान जीडीपी में अभी करीब 17% है, जबकि सरकार का लक्ष्य इसे 25% तक ले जाना है। पीएलआई रकमी (1.9 लाख करोड़, 14 सेक्टर) से कुछ फायदा जरूर हुआ है, लेकिन अब भी लोकल मैन्युफैक्चरिंग, लागत और एगिजिटेशन से जुड़ी कई चुनौतियां बनी हुई हैं। इसलिए बजट में रिसर्च डेवलपमेंट, टेक्निकल स्किल और इन्वेस्टमेंट पर टैक्स छूट या इंसेंटिव देने की जरूरत है, खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक्स, ईवी, डेटा सेंटर, एनर्जी स्टोरेज और सोलर जैसे सेक्टरों में।

ग्रीन एनर्जी पर मरोसेमंट पॉलिसी जरूरी

भारत ने 2030 तक जीडीपी की वोल्यूमिन्स इंटेन्सिटी 45% घटाने, 500 जीडब्ल्यू नॉन-फॉसिल पावर कैपेसिटी हासिल करने और 2070 तक नेट-जिरो बनने का लक्ष्य रखा है। अब कंपनियों को जरूरत है स्पष्ट पॉलिसी और लॉन्ग टर्म फंडिंग की, ताकि वे मरोसेमंट के साथ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में निवेश कर सकें। बजट से उम्मीद है कि ग्रीन इन्वेस्टमेंट के लिए बेहतर फाइनेंसिंग सिस्टम बने, वलीन एनर्जी वलस्टेर विकसित हों और प्रोजेक्ट्स को तेजी से लागू किया जा सके।

एमएसएमई को सस्ता और आसान लोन मिलना जरूरी

एमएसएमई सेक्टर देश के जीडीपी का करीब 30% और एक्सपोर्ट का 45% योगदान देता है, लेकिन इन्हें अब भी महंगा कर्ज और प्रोसेसिंग जैसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बजट में ऐसे कदम जरूरी हैं, जिससे एमएसएमई को तेजी से और कम ब्याज पर लोन मिल सके। इसके साथ ही मुद्रा योजना के तहत लोन की सीमा बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि प्रोजेक्ट्स की लागत अब पहले से कहीं ज्यादा हो चुकी है। इन क्षेत्रों को भी चाहिए बुरस्ट

फार्मा और मेडटेक को लेकर बड़ी उम्मीद

बजट 2026 में सरकार को फार्मा और मेडिकल डिवाइस सेक्टर में आत्मनिर्भरता पर जोर देना चाहिए। उनका सुझाव है कि मेडिकल डिवाइस सेक्टर के लिए 10,000 करोड़ रुपये का पीएलआई पैकेज दिया जाना चाहिए, जिससे ऑन्कोलॉजी, इमेजिंग और इम्प्लांट जैसे सेक्टर में घरेलू मैन्युफैक्चरिंग बढ़े। जीवन क्वालिटी के मुताबिक, अगर यह पीएलआई सपोर्ट मिलता है, तो भारत की मेडिकल डिवाइसेज में 70% तक की आयात निरभरता टाट सकती है और 2030 तक देश में 1.2 लाख करोड़ रुपये का घरेलू उत्पादन खड़ा किया जा सकता है।



इंश्योरेंस सेक्टर को भी चाहिए बड़ी राहत

बीमा

संदर्भ डेटा

इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। इंडस्ट्री मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है। इंश्योरेंस सेक्टर को बजट से कई उम्मीदें होती हैं, खासकर टैक्स छूट और पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाओं में वृद्धि की ऐसे में आइए जानते हैं इस बजट में इंश्योरेंस सेक्टर के लिए क्या कुछ खास पेश हो सकता है। एक फरवरी को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण केंद्रीय बजट 2026 पेश करने वाली हैं। ऐसे में अब देखना यह है कि बजट 2026 में वित्त मंत्री क्या क्या ऐलान करती हैं और इन ऐलानों से आम लोगों और अलग अलग सेक्टरों को क्या क्या लाभ मिलता है। बात करें इंश्योरेंस सेक्टर की तो इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बदती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है।

सेवशन 80डी की टैक्स सीमा

इलाज और मेडिकल खर्च लगातार तेजी से बढ़ रहे हैं। बावजूद इसके इनकम टैक्स एक्ट की धारा 80डी के तहत हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर मिलने वाली 25,000 रुपये की टैक्स कटौती सीमा कई सालों से बिना बदलाव के बनी हुई है। ऐसे में इस समय में यह सीमा आम लोगों की पर्याप्त राहत नहीं देती है। ऐसे में अब उम्मीद है कि सरकार इस बजट में इस सीमा को 25,000 रुपये से बढ़ाकर 50,000 रुपये कर सकती है।

टर्म इंश्योरेंस पर फोकस

भारत में आज भी बड़ी संख्या में लोगों के पास पर्याप्त लाइफ इंश्योरेंस सुरक्षा कवर नहीं है। रिपोर्ट्स के अनुसार, देश में करीब 17 ट्रिलियन डॉलर का मॉर्बिडिटी प्रोटेक्शन गैप मौजूद है यानी लोगों को जितनी जीवन बीमा सुरक्षा की जरूरत है, उसके मुकाबले लगभग 83 प्रतिशत जरूरतें अब भी पूरी नहीं हो पाई हैं। ऐसे में सरकार को टर्म इंश्योरेंस को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके लिए हेल्थ इंश्योरेंस पर टैक्स छूट, टर्म इंश्योरेंस प्रीमियम पर अलग टैक्स छूट मिलनी चाहिए।

जीएसटी और इंश्योरेंस प्रीमियम

इंश्योरेंस सेक्टर लंबे समय से जीएसटी से जुड़ी राहत की मांग कर रहा है। बीमा कंपनियां केवल जीएसटी से छूट नहीं, बल्कि पूरे सेक्टर को जीरो-रेट डर्जा दिए जाने की मांग कर रही हैं। अगर इंश्योरेंस को जीरो-रेट किया जाता है, तो कंपनियां अपने रोजमर्रा के खर्चों पर चुकाए गए टैक्स का इनपुट टैक्स क्रेडिट ले सकेंगी। इससे यह अतिरिक्त टैक्स बोझ प्रीमियम में नहीं जोड़ा जाएगा और ग्राहकों को कम प्रीमियम देना पड़ेगा।

यह भी चाहिए

- ▶ **टैक्स छूट:** इंश्योरेंस पॉलिसियों पर टैक्स छूट की सीमा बढ़ाने की मांग।
- ▶ **पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाएं:** पॉलिसीधारकों के लिए वेलम सेटलमेंट प्रक्रिया को सरल बनाने और अधिक सुविधाएं प्रदान करने की उम्मीद।
- ▶ **इंश्योरेंस पेनेट्रेशन बढ़ाना:** इंश्योरेंस सेवाओं को अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए सरकार से समर्थन की उम्मीद।
- ▶ **नियमों में बदलाव:** इंश्योरेंस सेक्टर की अधिक लेबल प्लेनरों को आकर्षित करने और विकास को बढ़ावा देने के लिए नियमों में बदलाव की उम्मीद।

यह भी जानिये

किस वित्त मंत्री ने पेश किए कितने बजट

भारत में हर साल 1 फरवरी के केंद्रीय बजट पेश किया जाता है। यह बजट भारत के वित्त मंत्री द्वारा पेश किया जाता है। हर साल की तरह इस साल भी केंद्रीय बजट 2026 आने वाली 1 फरवरी को भारत, को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किया जाएगा। 1947 में आजादी के बाद से अब तक भारत के कई वित्त मंत्रियों ने संसद में बजट पेश किए हैं। कुछ वित्त मंत्री थोड़े समय के लिए रहे और कम बजट पेश किए। वहीं, कुछ वित्त मंत्री लंबे समय के लिए रहे और उन्होंने कई बजट पेश किए। आज हम आपको इन्हीं के बारे में बताते वाले हैं। हम आपको बताएंगे कि 1947 में आजादी के बाद से भारत के कितने वित्त मंत्रियों ने कितने बजट पेश किए। आइए जानते हैं पूरी जानकारी।

आजादी के बाद पहला बजट

- ▶ आर. के. शनमुखम चेट्टी आजादी के बाद भारत के पहले वित्त मंत्री थे। उन्होंने 26 नवंबर 1947 में स्वतंत्र भारत का पहला बजट पेश किया था। आर. के. शनमुखम चेट्टी एक वकील और इकोनॉमिस्ट भी थे।
- ▶ भारत के सबसे ज्यादा बजट पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने पेश किए हैं। उन्होंने कुल 10 बजट पेश किए हैं। हालांकि, यह 10 बजट उन्होंने लगातार पेश नहीं किए। उन्होंने पहले 1959 से 1964 के बीच 6 बजट पेश किए और 1967 से 1969 के बीच 4 बजट पेश किए।
- ▶ पी चिदंबरम भारत के पूर्व वित्त मंत्री रहे हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान कुल 9 बजट पेश किए। उन्होंने अपना पहला बजट 1996 में पेश किया था। वहीं साल 2004 से 2008 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए, बाद में वह साल 2009 में एक बार फिर वित्त मंत्री बने और उन्होंने साल 2013 से 2014 के बीच बजट पेश किए।
- ▶ पूर्व राष्ट्रपति पणब मुखर्जी ने भी भारत में बजट पेश किए हैं। उन्होंने पहले वित्त मंत्री के रूप में भी कार्यकाल संभाला था। इस दौरान उन्होंने कुल 8 बजट पेश किए थे। उन्होंने पहले 3 बजट साल 1982 से 1984 के बीच पेश किए। वहीं साल 2009 से 2011 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए।
- ▶ निर्मला सीतारमण भारत की वर्तमान वित्त मंत्री हैं और वह साल 2019 से इस पद पर हैं। अब तक वहां 8 बजट पेश कर चुकी हैं और आने वाली 1 फरवरी को वह 9वां बजट पेश करने वाली हैं।

खबर संक्षेप

सैलून संचालक पर तेज धार हथियारों से हमला

सिरसा। जिला के गांव नेजाडेला कलां में सैलून संचालक पर तेजधार हथियारों से हमला कर दिया। हमले में सैलून संचालक को काफी चोटें लगीं और आरोप है कि उसे जान से मार देने की धमकी भी दी। पुलिस को दी शिकायत में गांव नेजाडेला कलां निवासी केवल राम ने बताया कि वह गांव में सैलून की दुकान करता है। बीते दिवस वह दुकान पर काम के लिए गया हुआ था। उसी समय स्वीफ्ट कार में सवार होकर बूटाराम, राजा व अन्य युवक आए। शिकायत में आगे बताया, बूटाराम ने आते ही कापे से उस पर वार कर दिया।

राजपुरा की बेटी खुशप्रीत ने प्राप्त की सफलता

ओढां। गांव राजपुरा की खुशप्रीत कौर ने एसीसीए की परीक्षा उत्तीर्ण कर जिला व प्रदेश का नाम रोशन किया है। गांव राजपुरा के पूर्व सरपंच सुखजिंदर सिंह ने बताया कि उनकी पुत्री खुशप्रीत कौर ने एसीसीए की सभी 13 परीक्षाएं पहली बार में पास करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। यह युके आधारित अकाउंटेंट सर्टिफिकेशन 180 से अधिक देशों में मान्य है।

लोन के नाम पर धोखाधड़ी का तीसरा आरोपी काबू

फतेहाबाद। ट्रैक्टर फाइनेंस के नाम पर किसान के साथ लाखों रुपये की धोखाधड़ी करने के मामले में कार्रवाई करते हुए सदर टोहाना पुलिस ने तीसरे आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। थाना सदर टोहाना प्रभारी उप-निरीक्षक सादिराम ने बताया कि पीड़ित किसान रामप्रसाद निवासी गांव इन्दाछोई ने शिकायत दर्ज करवाई थी कि एलटी फाइनेंस कंपनी के एजेंटों और मैनेजर ने कम किरतों पर नया ट्रैक्टर दिलाकर का झंसा देकर उसके दस्तावेज और खाली चेक हासिल कर लिए थे। बाद में आरोपियों ने मिलीभगत कर पीड़ित के फर्जी हस्ताक्षर और दस्तावेजों का दुरुपयोग किया।

दिलों की सांझ लघुकथा संग्रह का विमोचन

रतिया। साहित्य अकादमी द्वारा साहित्यकार डॉ नैब सिंह मंडेर के लघुकथा संग्रह 'दिलों की सांझ' का लोक अर्पण व गोष्ठी का आयोजन किया गया। लोक चेतना मंच द्वारा लायंस क्लब रतिया सिटी के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार व आलोचक निरंजन बोहा व जगजतीन्द्र सिंह शामिल हुए। उपन्यासकार अजीज सरोए, शायर दिलबाग रिआँद, तेजिंदर सिंह ओजला, गोपाल चंद कुलरिया एवं शायर गुलाब सिंह ने विशिष्ट अर्थिथ के तौर पर शिरकत की।

सॉफ्ट बाल में स्टेट का प्रतिनिधित्व करेगी पूनम

फतेहाबाद। 69वाँ राष्ट्रीय विद्यालय खेल प्रतियोगिता अंडर 17 ग्ल्स सॉफ्ट बाल चैम्पियनशिप की



नेशनल प्रतियोगिता 4 से 8 फरवरी तक छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में आयोजित होगी। इसमें हरियाणा की स्टेट टीम का प्रतिनिधित्व फतेहाबाद के गांव कुम्हारिया स्थित राजकीय उच्च विद्यालय की छात्रा पूनम पुत्री सुभाष करेगी। गौरतलब है कि राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में स्कूल की टीम प्रथम स्थान पर रही थी।

गुरु रविदास जयंती पर मंडारा आज

सिरसा। संतश्री गुरु रविदास सभा की ओर से रानियां रोड स्थित श्री गुरु रविदास मंदिर में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा जिसकी अध्यक्षता समाजसेवी बलवंत शैली करेंगे। स्वयं शैली ने कार्यक्रम संबंधी बताया कि फरवरी को सुबह आयोजित मुख्य कार्यक्रम में मुख्यातिथि के तौर पर पूर्व विधायक सत्यप्रकाश जरावता व पूर्व डीजीपी बीएस संघु शिरकत करेंगे। कार्यक्रम के दौरान शोभायात्रा भी निकाली जाएगी। शोभायात्रा के उपरंत 'भंडारा लगाया जाएगा, जिसमें हजारों श्रद्धालु शिरकत कर प्रसाद ग्रहण करेंगे।

बीड कॉलेज में एनएसएस शिविर में डिजिटल सुरक्षा और नशा मुक्ति पर फोकस समाज को नशामुक्त करने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी युवा वर्ग पर : बत्रा

- कार्यक्रम आईसीटी क्लब के संयुक्त तत्वाधान में 'डिजिटल लिटरेसी एवं एडिक्शन प्री अवेयरनेस' थीम पर समापन
- शिविर के दूसरे सत्र में 'नशा मुक्ति जागरूकता रैली' निकाली

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

मनोहर मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, फतेहाबाद में चल रहे सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के पांचवें दिन एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आईसीटी क्लब के संयुक्त तत्वाधान में 'डिजिटल लिटरेसी एवं एडिक्शन प्री अवेयरनेस' थीम के अंतर्गत संपन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के तौर पर पहुंचे नवीन कुमार ने छात्राओं को वर्तमान युग की सबसे बड़ी चुनौती 'साइबर सुरक्षा' के बारे में विस्तार से जागरूक किया। उन्होंने डिजिटल सुरक्षा के महत्वपूर्ण उपाय साझा



फतेहाबाद। बीएड कॉलेज से नशामुक्ति जागरूकता रैली को रवाना करते एजुकेशन सोसाइटी के प्रधान राजीव बत्रा।

करते हुए बताया कि कैसे सतर्कता बरतकर ऑनलाइन धोखाधड़ी और साइबर अपराधों से बचा जा सकता है। शिविर के दूसरे सत्र में सामाजिक सरोकार निभाते हुए स्वयंसेवकों ने एक 'नशा मुक्ति जागरूकता रैली' निकाली। मनोहर मेमोरियल एजुकेशन सोसाइटी के प्रधान राजीव बत्रा ने

स्वयंसेवकों को अपनी शुभकामनाएं दीं और रैली को रवाना किया। उन्होंने कहा कि युवा किसी भी देश की रीढ़ होते हैं। आज समाज को नशे जैसी कुरीतियों से मुक्त करने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारे युवा वर्ग पर है। रैली के माध्यम से स्वयंसेवक सिविल अस्पताल पहुंचे।

मरीजों से किया सीधा संवाद

यहां छात्राओं ने नशे की लत से जुड़ा रहे मरीजों से सीधा संवाद किया। उन्होंने जाना कि कैसे सही उपचार और दृढ़ इच्छाशक्ति के माध्यम से लोहा स्वस्थ जीवन की ओर लौट रहे हैं। अस्पताल द्वारा उपजाऊं जा रही उपचार एवं पुनर्वास प्रक्रिया को समझना स्वयंसेवकों के लिए एक अत्यंत प्रेरणादायक और मायुक्त अनुभव रहा। दिन भर चले इन कार्यक्रमों ने न केवल छात्राओं को तकलीफ के प्रति सजग किया, बल्कि उन्हें समाज को नशा मुक्त बनाने की दिशा में काम करने के लिए भी प्रेरित किया। अंत में, कॉलेज की प्राचार्य डॉ. जमक रानी ने कार्यक्रम के सफल आयोजन की बधाई दी और स्वयंसेवकों के प्रयासों की सराहना की।

अपेक्स कॉन्वेंट स्कूल में तीन दिवसीय खेल प्रतियोगिता

विद्यार्थियों ने विभिन्न खेलों में दिखाया दमखम

- विजेता प्रतिभागियों को स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक प्रदान कर किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

सतीश कॉलोनी स्थित अपेक्स कॉन्वेंट स्कूल में तीन दिवसीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें स्कूल के लगभग सभी बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता में 100 मीटर, 200 मीटर और 400 मीटर रेस, टन ऑफ वार, शॉट पुट और लॉन्ग जंप जैसे मुख्य खेल शामिल थे। खेलों का शुभारंभ मशाल जलाकर किया गया, जिससे प्रतियोगिता का प्रारंभ अत्यंत



फतेहाबाद। अपेक्स स्कूल में विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करते स्कूल प्रबंधक।

उत्साहपूर्ण और प्रेरक वातावरण में हुआ। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में खेलों के प्रति रुचि, टीम वर्क और खेल भावना को बढ़ावा देना था। स्कूल संचालक अमित मकड़ ने कहा कि स्कूल में

खेलों का महत्व हमेशा सर्वोपरि रहा है और इस तरह के आयोजनों से बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होता है। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी छात्रों ने अपनी मेहनत और उत्साह

से स्कूल का नाम रोशन किया। प्रतियोगिता में बच्चों ने अपनी गति, धैर्य और चपलता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विजेता प्रतिभागियों को स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक प्रदान किए गए। कार्यक्रम का समापन बच्चों के उत्साह और हर्षोल्लास के साथ हुआ। प्राचार्य उमंग कक्कड़ ने विजेता छात्रों को बधाई दी और कहा कि खेल केवल प्रतिस्पर्धा का माध्यम नहीं है, बल्कि यह बच्चों में आत्मविश्वास, अनुशासन और सहयोग की भावना को भी बढ़ावा देता है। उन्होंने विजेता छात्रों को स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक प्रदान करते हुए उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

सिरसा की पूर्वी बगड़िया हुई सम्मानित



हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड-2025 में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने वाली सिरसा की पूर्वी बगड़िया को दिल्ली में सम्मानित किया गया। पूर्वी बगड़िया ने अभिभावकों के प्रोत्साहन व अपनी मेहनत से ये साबित किया है कि अब बेटियां बोझ नहीं हैं। अपनी उपलब्धि से पूर्वी बगड़िया ने बेटियों को बोझ समझने वाले लोगों को सकारात्मक संदेश दिया है कि अगर बेटे

सिरसा। पूर्वी बगड़िया को सम्मानित करते हुए आयोजक।

को भी बेटे की तरह सही परवरिश मिले तो वह भी हर मुकाम को भली भांति छू सकता है। स्वर्णिम सफलता को लेकर पूर्वी बगड़िया ने कहा कि उसे अभिभावकों का पुरा सहयोग व प्रोत्साहन मिला, जिस कारण वह सफलता की सीढ़ियां लगातार चढ़ रही है। उन्होंने बताया कि वह अपना अधिकतर समय पढ़ाई व अन्य कंपीटिशन की तैयारियों में व्यतीत करती है। पूर्वी बगड़िया ने युवाओं से आह्वान किया कि अगर मन में कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो कोई भी मजिल मुश्किल नहीं है।

बाबा ब्रह्मदास ने दिया दीपक को आशीर्वाद

सिरसा। डेरा बाबा भूमणशाह के गद्दीनशेन बाबा ब्रह्मदास ने युवा क्रिकेट कोच फतेहाबाद निवासी दीपक कंबोज को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स अचीवर्स अवार्ड की उपलब्धि के लिए आशीर्वाद देते हुए शुभकामनाएं दीं। बाबा ने कहा कि कोच दीपक कंबोज युवाओं के लिए एक प्रेरणा की मिसाल बने हैं। देश के बहुत से युवा नशों की चपेट में आते जा रहे हैं। कोच दीपक कंबोज के अछूते कार्यों से आज के युवाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए और नशों का सेवन न करते हुए खेलों का चयन करना चाहिए, जिससे कि समाज और देश का नाम ऊंचा होता है। कोच दीपक कंबोज को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स अचीवर्स अवार्ड से इनामिल नवाजा गया है, क्योंकि दीपक कंबोज मात्र 23 वर्ष की उम्र में देश के सबसे युवा कोच बने हैं। इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स अचीवर्स अवार्ड से नवाजे जाने पर दीपक कंबोज के परिवार, गांव वालों और खेल प्रेमियों में उत्साह का माहौल है। कोच दीपक कंबोज ने ऐसे खिलाड़ियों को कोचिंग दी, जिन खिलाड़ियों के हाथ व पांव नहीं थे।



सिरसा। इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स अचीवर्स अवार्ड से सम्मानित दीपक को बाबा ब्रह्मदास आशीर्वाद देते।

राजकीय महिला कॉलेज में नेल आर्ट कार्यशाला संपन्न

सिरसा। राजकीय महिला महाविद्यालय सिरसा में आयोजित दो दिवसीय नेल आर्ट कार्यशाला शनिवार को संपन्न हुई। प्रवक्ता डॉ. कपिल सैनी ने बताया कि नेल आर्ट के माध्यम से साधारण नेल केयर से लेकर आधुनिक डिजाइन, थी-डी आर्ट, जेल नेल, एपेनलिक नेल एवं शाइडल नेल आर्ट जैसी अनेक तकनीकों को सीखा जा सकता है। वर्तमान समय में इसकी मांग ब्यूटी पार्लर, फैशन इंडस्ट्री एवं व्यक्तिगत उद्यम के रूप में तेजी से बढ़ रही है। कम लागत में इस क्षेत्र में कार्य आरंभ किया जा सकता है, जिससे छात्राएं अपने घर से ही कार्य कर आत्मनिर्भर बन सकती हैं। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय में संचालित सिलाई प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षक रूबी जैन द्वारा छात्राओं को सिलाई की नई एवं आधुनिक तकनीकों का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। प्राचार्य डॉ. शत्रुंजलि सिंह ने कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाएं छात्राओं के कौशल विकास एवं रोजगारपरक शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महिला प्रकोष्ठ प्रमारी डॉ. प्रीति कौर ने कार्यशाला को छात्राओं के व्यक्तिगत निर्माण एवं भविष्य के लिए उपयोगी बताया।

सिख समाज ने सीएम सैनी का जताया आगार

सिरसा। मुख्यमंत्री आवास संत कबीर कुटीर में सिख समाज द्वारा हरियाणा के मुख्यमंत्री नारायण सिंह सैनी को सम्मानित किया गया। गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के वरिष्ठ सदस्य प्रकाश सिंह साहुवाला एवं शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेंटी अमृतसर के वरिष्ठ सदस्य बाबा गुरमीत सिंह तिलोके वाला के नेतृत्व में काफी संख्या में सिख समाज के सेवकों ने भाग लिया। विगत दिनों मुख्यमंत्री द्वारा सिख गुरुओं व सिख समाज के प्रति दर्शाई गई असौम्य व अपार श्रद्धा, सत्कार व सम्मान से पूरा समाज गौरवान्वित महसूस कर रहा है। मुख्यमंत्री के प्रयास से नौवें गुरु श्री तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित मध्य विशाल समारोहों में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह के सल्लिमिल होने से पूरे भारत की संगत में खुशी की लहर है। मुख्यमंत्री को श्रद्धा व सेवा से श्री गुरु तेग बहादुर के शहीदी शताब्दी वर्ष को समर्पित हरियाणा के चारों कोनों से निकाली गई चार शहीदी यात्राओं से गुरु साहब की शिक्षाओं का पूरे समाज में अत्यन्त प्रभावी व सकारात्मक संदेश गया। श्री गुरु गोविंद सिंह के छोटे साहबजादे के शहीदी दिवस को समर्पित वीर बाल दिवस के अवसर पर पूरे प्रदेश के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विद्यालयों सहित विभिन्न कार्यक्रमों से प्रदेश की भावी पीढ़ी को साहबजादे की महान शहादत से प्रेरणा मिलेगी।



सिरसा। सिख समाज मुख्यमंत्री सैनी को सम्मानित करते हुए।

गरीब किसानों को सब्जियों के उच्च गुणवत्ता वाले बीज किए वितरित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

डेरा सच्चा सौदा सिरसा में आयोजित सत्यं संवर्धन कार्यक्रम के दौरान गांव नुहियावाली, धर्मपुरा व दारेवाला के अति गरीब किसानों को सब्जियों के उच्च गुणवत्ता वाले बीज वितरित किए गए, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपनी आजीविका बेहतर कर सकें। वहीं अपनी का सहारा मुहिम के तहत सिरसा शहर की झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले जरूरतमंद बच्चों को कपड़े, जूते व अन्य आवश्यक सामान प्रदान किया गया। रोशनी की राह मुहिम के अंतर्गत शहर के एक संस्थान में अध्ययनरत मंदबुद्धि बच्चों के लिए खाद्य सामग्री व स्टेशनरी उपलब्ध करवाई गई। मुफ्त हक मुहिम के तहत अधिवक्ताओं द्वारा जरूरतमंद लोगों को निशुल्क कानूनी सलाह दी गई। ढाणी सावपुरा स्थित स्कूल में सफाई अभियान चलाकर विद्यालय परिसर को स्वच्छ बनाया गया।

- झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले जरूरतमंद बच्चों को कपड़े व अन्य जरूरी सामान प्रदान किया

विशेषज्ञों ने दिया छात्रों को मार्गदर्शन

इसके साथ ही करियर गाइड मुहिम के तहत विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा विद्यार्थियों की काउंसलिंग कर उन्हें उनकी रुचि व क्षमता के अनुसार बेहतर करियर चुनने के लिए मार्गदर्शन दिया गया। सहारा-ए-इन्कॉस मुहिम के अंतर्गत उन गरीब परिवारों की सहायता की जा रही है जिनके मुखिया या इकतलीते संतान की नशे की लत के कारण मृत्यु हो चुकी है। निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविरों की श्रृंखला में शनिवार को नेत्र रोग जांच शिविर लगाया गया। इसमें विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा नेत्र रोगियों की जांच कर उन्हें उचित उपचार दिया गया। वहीं एमएसजी नेचुरोपैथी अस्पताल में प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से रोगों का उपचार लगातार जारी रहा।

अभियान राज्य स्तरीय अभियान के तहत आयुष योग सहायक ने विद्यार्थियों को दिया प्रशिक्षण

आरोही मॉडल स्कूल में 'सूर्य नमस्कार' की गूँज योग युक्त-नशा मुक्त भारत का लिया संकल्प

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

हरियाणा सरकार, हरियाणा योग आयोग और आयुष विभाग के संयुक्त तत्वाधान में चलाए जा रहे 30 दिवसीय 'सूर्य नमस्कार अभियान' ने अब अपनी पूरी प्रखरता पकड़ ली है। इसी कड़ी में आरोही मॉडल स्कूल, सरवरपुर में एक विशेष प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. प्रवीण शर्मा और योग समन्वयक डॉ. भारती चौहान के निर्देशानुसार एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी डॉ. विष्णुजीत जांगड़ा के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। मुख्य प्रशिक्षक आयुष योग सहायक अनिल कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि यह अभियान 12 जनवरी



फतेहाबाद। आरोही स्कूल सरवरपुर में सूर्य नमस्कार का अभ्यास करते विद्यार्थी।

स्वामी विवेकानंद जयंती से शुरू होकर 12 फरवरी महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती तक चलेगा। उन्होंने कहा, योग और प्राणायाम हमारे ऋषि-मुनियों से मिली वह संजीवनी विद्या है, जिसे

अपनाकर न केवल हम स्वस्थ रह सकते हैं, बल्कि भारत माता के गौरव को भी पुनः प्रतिस्थापित कर सकते हैं। अनिल कुमार ने 'योग युक्त-नशा मुक्त भारत' का नारा देते हुए सूर्य

नमस्कार के शारीरिक और मानसिक लाभों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सूर्य नमस्कार से पैदाग्रता बढ़ती है और तनाव, अवसाद व चिंता जैसी समस्याओं से मुक्ति मिलती है।

शपथ दिलावाई

इस अवसर पर आयुष योग सहायक उवासेन ने उपस्थित विद्यार्थियों को प्रतिदिन सूर्य नमस्कार और योग करने की शपथ दिलावाई। स्कूल के म्यूजिक टीचर ऋषि कुमार ने 'पहला सुख निरोगी काया' का संदेश देते हुए कहा कि विद्यालय का स्टॉफ और बच्चे इस स्वास्थ्यवर्धक गतिविधि को जीवन का अटूट हिस्सा बनाएंगे। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के लेक्चरर अंजु देवी, संदीप कुमार, सुनील कुमार, सोम प्रकाश और धापा कुमारी ने सक्रिय भूमिका निभाई। सभी ने पूरे उत्साह के साथ सूर्य नमस्कार के विभिन्न चरणों का अभ्यास किया।

खबर संक्षेप



न्यायाधीश ने बाल गोपाल धाम का किया निरीक्षण

सिरसा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के चेयरमैन एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुनीष जिंदिया व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी प्रवेश सिंगला ने स्थानीय भाई कन्हैया आश्रम के बाल गोपाल धाम का दौरा किया गया। इस दौरान उन्होंने साफ-सफाई का निरीक्षण किया और यहां उपस्थित दिव्यांग बच्चों से मुलाकात की और हालचाल जाना। फोटो:31सिरसा08: बाल गोपाल धाम का निरीक्षण करने पहुंचे न्यायाधीश पुनीष जिंदिया व प्रवेश सिंगला।

हैंडबॉल में प्रदेश का नेतृत्व करेगा छात्र प्रमोद

सिरसा। गुजरात में आयोजित होने वाली 69 नेशनल स्कूल गेम हैंडबॉल अंडर-19 के लडकों में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भरोखा का 12वीं कक्षा का छात्र प्रमोद हरियाणा टीम का नेतृत्व करेगा। प्राचार्य वेद रोज ने बताया कि स्कूल के डीपीई देव कंबोज के अथक परिश्रम से विद्यालय की टीम जिला व राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपरांत अब नेशनल स्तर पर अपना जीत का परचम लहराएगी। रोज ने कहा कि विद्यालय शिक्षा के साथ साथ खेलों में भी अग्रणी स्थान प्राप्त कर रहा है खेलों में टीम को प्रथम स्थान पर उल्लेखनीय योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने बताया कि पिछले दिनों इन खेलों की बदौलत भरोखा गांव के कई नौजवान भारतीय सेना में भर्ती होकर भारत माता की सेवा कर रहे हैं।

पुलिस लाइन में मेगा स्वास्थ्य जांच शिविर एक को

फतेहाबाद। पुलिस विभाग द्वारा पुलिस लाइन फतेहाबाद में एक मेगा स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन एक फरवरी को किया जाएगा। यह स्वास्थ्य शिविर विशेष रूप से उन पुलिस कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों के लिए आयोजित किया जाएगा, जो लगातार तनावपूर्ण परिस्थितियों में कार्य करते हुए अपने स्वास्थ्य की अनदेखी कर देते हैं। विशेषकर हृदय संबंधी एवं अन्य गंभीर बीमारियों से ग्रसित कर्मियों के लिए यह शिविर अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

दूसरा बच्चा लड़का होने पर मिलेगी 5000 की सहायता

सिरसा। प्रदेश सरकार द्वारा गर्भवती महिलाओं को अधिक से अधिक सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से कई अहम कदम उठाए जा रहे हैं। हरियाणा में महिलाओं को मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना के माध्यम से दूसरा बच्चा लड़का होने पर भी प्रदेश सरकार की योजना के तहत 5 हजार रुपये मिलेंगे। योजना का लाभ केवल हरियाणा राज्य की निवासी महिलाओं को मिलेगा। पात्र महिलाओं को सरकारी अस्पताल में जननी सुरक्षा योजना के अंतर्गत प्रसव कराना अनिवार्य होगा, जिसके तहत पहले से औसतन एक हजार रूपये की सहायता भी मिलती है। इसके अतिरिक्त, परिवार पंहचान पत्र में माता-पिता व दोनों बच्चों का नाम दर्ज होना आवश्यक है।

गरीब की पहुंच से बाहर हुआ सोना-चांदी

फतेहाबाद। गांव हिजरावा कलां के प्रमुख समाजसेवी सतपाल बाजीगर ने देश में सोने और चांदी की लगातार बढ़ती कीमतों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। उन्होंने इस गंभीर समस्या के समाधान हेतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और राज्यसभा सांसद सुभाष बराला को पत्र लिखकर विशेष मांग की है। सतपाल बाजीगर ने अपने पत्र में उल्लेख किया कि वर्तमान में सोने और चांदी के भाव आसमान छू रहे हैं, जिसके कारण यह बहुमूल्य धातुएं अब गरीब किसान और मजदूर वर्ग की पहुंच से कोसों दूर होती जा रही हैं। उन्होंने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए केंद्र सरकार से मांग की है कि सोने व चांदी को

गांव पीलीमंदोरी में 2 फरवरी को पंडित जसराज की जयंती पर होगा राज्य स्तरीय समारोह
मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर उपायुक्त ने किया समारोह स्थल का निरीक्षण

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के 2 फरवरी को प्रस्तावित फतेहाबाद दौरे को लेकर जिला प्रशासन द्वारा व्यापक तैयारियों की जा रही हैं। इसी क्रम में उपायुक्त डॉ. विवेक भारती व मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र बडखालसा ने गांव पीलीमंदोरी पहुंचकर पंडित जसराज जयंती के अवसर पर आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय समारोह की तैयारियों का निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने कार्यक्रम स्थल, मंच व्यवस्था, दर्शक दीर्घा, पार्किंग, यातायात प्रबंधन, सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छता, पेयजल, बिजली तथा आपातकालीन सेवाओं की तैयारियों का विस्तार से जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मुख्यमंत्री के



फतेहाबाद। गांव पीलीमंदोरी में राज्य स्तरीय समारोह की तैयारियों का जायजा लेते हुए उपायुक्त व मुख्यमंत्री के ओएसडी।

आगमन को ध्यान में रखते हुए सभी व्यवस्थाएं समय रहते पूर्ण कर ली जाएं तथा कार्यक्रम के दौरान किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न हो।मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र बडखालसा ने कहा कि यह राज्य स्तरीय समारोह प्रदेश सरकार की संत-महापुरुष सम्मान एवं विचार प्रसार योजना के अंतर्गत आयोजित किया जा रहा है, इसलिए कार्यक्रम की गरिमा एवं भव्यता का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि

धारा 163 के अंतर्गत जिलाधीश ने जारी किए आदेश

जिलाधीश ने मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के जिला फतेहाबाद में 2 फरवरी को गांव पीलीमंदोरी में प्रस्तावित दौरा कार्यक्रम के मद्देनजर व्यायामशाला पीलीमंदोरी में स्थापित हैलीपेड स्थल, कार्यक्रम स्थल व वीवीआईपी मार्ग के पांच किलोमीटर के क्षेत्र में ड्रोन नियम 2023 के तहत रेड जोन घोषित करते हुए ड्रोन, पैरा ग्लाइडर उड़ाने पर प्रतिबंध लगाने के आदेश जारी किए हैं। इसके अलावा कार्यक्रम स्थल के पांच किलोमीटर की परिधि के क्षेत्र में लार्वा, डंडे, तलवार, गंडाजी, आग, घातक हथियार, खुला पैट्रोल, डीजल की बोतल, केन व कार्यक्रम स्थल तथा उसके आसपास के 75 मीटर के दायरे में सड़क के दोनों तरफ वाहन खड़ा करने पर प्रतिबंध लगाया है। उपरोक्त आदेशों की अवहेलना में यदि कोई व्यक्ति दोषी पाया जाता है तो वह भारतीय व्यापक संहिता 2023 की धारा 223 के तहत दंड का भागी होगा और अन्य कानूनी प्रावधान जो लागू हो सकते हैं।

ये रहे मौजूद

निरीक्षण के बाद उपायुक्त ने लघु सचिवालय के सभागार में जिला अधिकारियों की बैठक लेकर तैयारियों की समीक्षा भी की। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन, एडीसी अनुराग दालिया, एसडीएम आकाश शर्मा, बीजेपी जिला प्रधान प्रवीण जोड़ा, ओपी मालिया, एसडीएम राजेश कुमार, सुरेन्द्र सिंह, आरटीए संजय बिश्नोई, जिए सीईओ सुरेश कुमार, सीटीएम गौरव गुप्ता, डीडीपीओ अनूप सिंह, डीआरओ श्याम लाल, उपनिदेशक अमित पंवार, डीआईओ सिकंदर, डिप्टी सीएमओ मेहनत डॉ. शरद टूली सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, पुलिस प्रशासन, स्वास्थ्य, लोक निर्माण, बिजली, जनस्वास्थ्य, नगर परिषद सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

शिक्षा को जीवन समर्पित करने वाले प्राचार्य सुभाष टुटेजा हुए सेवानिवृत्त, दी गई भावभीनी विदाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

गांव अयालकी के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में प्राचार्य के पद पर इमानदारी, मेहनत एवं लगन से निर्वहन करने वाले सुभाष टुटेजा आज सेवानिवृत्त हो गए। उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सुभाष टुटेजा ने अपने 34 वर्षों के दीर्घ, निष्कलंक एवं निष्ठापूर्ण सेवाकाल में अध्यापन कार्य को केवल दायित्व नहीं, बल्कि समाज निर्माण का सशक्त माध्यम बनाया।



फतेहाबाद। सेवानिवृत्त प्राचार्य सुभाष टुटेजा को सम्मानित करते अधिकारी।

नवंबर 2019 में इन्हें प्राचार्य की पदोन्नति प्राप्त हुई एवं उनकी प्राचार्य के तौर पर पहली नियुक्ति राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नागपुर में हुई।सुभाष टुटेजा ने अपने सेवाकाल के दौरान विभिन्न राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में कार्य करते हुए शिक्षा की गुणवत्ता एवं अनुशासन को सुदृढ़ किया। प्रारंभिक

वर्षों में वे अध्यापन कार्य में रसायन विज्ञान के प्रवक्तृ के रूप में मुख्य रूप से राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय फतेहाबाद एवं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय फतेहाबाद में कार्य किया। अन्य विद्यालयों में पदस्थापित रहते हुए

छात्रों को अनुशासन में रहने की दी सलाह

यह आयोजन उनके विद्यार्थियों के प्रति गहरे लगाव, मानवीय संवेदना एवं सेवा-भाव का सजीव उद्घरण रहा। समारोह के दौरान सुभाष टुटेजा ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों, अनुशासन एवं समाज सेवा के मार्ग पर अग्रसर रहने की प्रेरणा देते हुए भविष्य में भी सहयोग हेतु सदैव उपलब्ध रहने का आश्वासन दिया।

माध्यमिक विद्यालय अयालकी में हुआ, जहां से 31 जनवरी सुभाष टुटेजा ने 34 वर्षों का सेवाकाल पूर्ण कर सेवानिवृत्ति प्राप्त की। इस सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में उन्होंने विदाई पार्टी पर होने वाले परंपरागत लंच के स्थान पर अपने विद्यार्थियों के प्रति स्नेह एवं आत्मीयता व्यक्त करते हुए स्वयं की ओर से विद्यार्थियों के लिए स्वादित एवं शाही लंच का आयोजन किया।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भूना

गांव जांडलीकलां में स्वर्गीय सोहन लाल भैरों की स्मृति में उनके बेटों और भतीजों द्वारा निर्मित भव्य मुख्य द्वार का विधिवत उद्घाटन किया गया। करीब साढ़े सात लाख रुपये की लागत से बने इस मुख्य द्वार ने गांव की सुंदरता में चार चांद लगा दिए हैं। उद्घाटन जिला शिक्षा अधिकारी संगीता बिश्नोई ने रिबन काटकर किया। कार्यक्रम का अध्यक्षता शमशेर सिंह भैरों ने की। मुख्य द्वार के निर्माण से गांव को एक नई पहचान मिली है। प्रवेश द्वार की आकर्षक डिजाइन, मजबूत निर्माण और कलात्मक सजावट ग्रामीणों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है। ग्रामीणों का कहना है कि यह द्वार न केवल गांव की शोभा बढ़ाएगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी स्वर्गीय सोहन लाल भैरों की स्मृतियों को संजोकर रखेगा।

भट्टू पंचायत समिति चेयरमैन का चुनाव 9 फरवरी को

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

जिले की भट्टू पंचायत समिति की नई चेयरमैन का चुनाव 9 फरवरी को होगा। इसको लेकर राज्य चुनाव आयोग की ओर से जैसे की तिथि की घोषणा की गई, वैसे ही पंचायत समिति सदस्यों में हलचल तेज हो गई है। पहले चेयरमैन पद पर कांग्रेस समर्थित ज्योति लूणा का कब्जा था जिन्हें सदस्यों ने अविश्वास प्रस्ताव लाकर हटा दिया था। अब चेयरमैन पद पूर्व विधायक दुड़ाराम के समर्थक को मिलना तय माना जा रहा है। बता दें कि, 22 जनवरी को पंचायत समिति चेयरपर्सन ज्योति लूणा के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाकर सदस्यों ने उनको कुर्सी से हटा दिया था। उनके खिलाफ 21 में से 18 सदस्यों ने वोटिंग की थी। पूर्व विधायक दुड़ाराम के समर्थन से वार्ड नंबर 5 से पंचायत समिति सदस्य अनूप शरद का चेयरपर्सन बनना तय है। चेयरपर्सन की कुर्सी अनुसूचित जाति वर्ग की महिला

सदस्य के लिए आरक्षित है। इस वर्ग से केवल दो ही महिला सदस्य चुनी गई थीं। इनमें अनु व ज्योति लूणा शामिल थी। ज्योति लूणा की खिलाफत के बाद अब अनु का कुर्सी पर बैठना तय है। दरअसल, साल 2022 में हुए पंचायत चुनाव के बाद तत्कालीन भाजपा विधायक दुड़ाराम के समर्थन से वार्ड नंबर 14 से सदस्य ज्योति लूणा को चेयरपर्सन प्रस्ताव लाकर हटा दिया था। अब चेयरमैन पद पूर्व विधायक दुड़ाराम के समर्थक को मिलना तय माना जा रहा है। बता दें कि, 22 जनवरी को पंचायत समिति चेयरपर्सन ज्योति लूणा के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाकर सदस्यों ने उनको कुर्सी से हटा दिया था। उनके खिलाफ 21 में से 18 सदस्यों ने वोटिंग की थी। पूर्व विधायक दुड़ाराम के समर्थन से वार्ड नंबर 5 से पंचायत समिति सदस्य अनूप शरद का चेयरपर्सन बनना तय है। चेयरपर्सन की कुर्सी अनुसूचित जाति वर्ग की महिला



चुनाव का शेड्यूल किया जारी

आधिकारक दुड़ाराम समर्थकों ने 22 जनवरी को ज्योति को कुर्सी से हटा दिया। भट्टू पंचायत समिति के वाइस चेयरमैन बंसीलाल भोगारस ने बताया कि चुनाव आयोग ने 9 फरवरी को चुनाव करवाने का शेड्यूल जारी कर दिया है। इसका आधिकारिक पत्र हमें एक-दो दिन में मिलेगा। हम सभी समर्थक सदस्य अनु सरबटा को चेयरपर्सन बनाने की सहमति जता चुके हैं।



कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

डीईओ संगीता बिश्नोई ने कहा कि गांवों के विकास में सामाजिक सहभागिता और परिवारों का योगदान बेहद महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के कार्य समाज में सकारात्मक संदेश देते हैं और सामूहिक सहयोग की भावना को मजबूत करते हैं। उन्होंने भैरों परिवार के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्य प्रेरणास्रोत बनते हैं। कार्यक्रम में सरपंच शोला भैरों, सरपंच प्रतिनिधि विजय कमांडो, पूर्व सरपंच भलेराम जालान, बसाऊ राम,बीरराम भैरों,सुशील भैरों, रामफल भैरों,कामरंड रमेश कुमार, पूर्व सरपंच ईश्वर भैरों, चंद्र सोनी, सुरेंद्र श्योकंद, सुरेंद्र मोनोज कुमार, सुरेंद्र भैरों, झानौराम शर्मा, होंशियार सिंह जांगटा, मता छिपी, जगता राम कुलडिया, पटवारी विन्डर भैरों, ईश्वर सिंह, दलाबीर सिंह भैरों, विवेक कुमार सहित अनेक गणमान्य लोग और ग्रामीण मौजूद रहे। सभी ने मुख्य द्वार के निर्माण की प्रशंसा करते हुए इसे गांव के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया।

सीएमके महाविद्यालय में हुई अंतर-महाविद्यालय प्रतियोगिता
जल संरक्षण रैली निकालकर दिया जागरूकता का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा



सिरसा। सीएमके नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग ने अंतर-महाविद्यालयी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों को दो महत्वपूर्ण एवं समाजमयिक विषयों मनरेगा योजना का नया नाम तथा 'डिक्स का वैश्विक प्रभाव' पर अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया गया। प्रतिभागियों ने तथ्यों, आंकड़ों और तर्कोंपूर्ण विश्लेषण के माध्यम से विषयों को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया, जिसे उपस्थित श्रोताओं एवं निर्णायक मंडल ने सराहा। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सीएमके कॉलेज के एमए अर्थशास्त्र प्रथम वर्ष के छात्र विक्रम सिंह ने अपने सशक्त तर्कों, स्पष्ट प्रस्तुति और आत्मविश्वासपूर्ण वक्तव्य के बल पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं लाला हंसराज फुटोला कॉलेज ऑफ लॉ के बीएफएलएलबी तृतीय वर्ष की छात्रा दिव्या ने अपने प्रभावी विश्लेषण और संतुलित विचारों के माध्यम से द्वितीय स्थान हासिल किया। इसके अतिरिक्त कॉलेज के एमए अर्थशास्त्र प्रथम वर्ष की छात्रा आरती ने अपने विषय की गहरी समझ और सुव्यवस्थित प्रस्तुति के आधार पर तृतीय स्थान प्राप्त किया। समापन अवसर पर कार्यकारी प्राचार्य एवं विभागध्यक्ष बबिता मल्होत्रा ने सभी विजेता विद्यार्थियों एवं प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस प्रकार की अंतर-महाविद्यालयी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मक भावना, आत्मविश्वास तथा अकादमिक दृष्टिकोण को सुदृढ़ करती हैं।



पानी बचेगा तो जीवन बचेगा, इसी संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से शनिवार को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हूकड़ा में राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह 2025-26 के चरण दो के अंतर्गत जल संरक्षण रैली निकाली गई। रैली के दौरान विद्यार्थियों ने जल संरक्षण की शपथ लेते हुए यह संकल्प किया कि वे स्वयं भी पानी की एक-एक बूंद बचाएंगे और अपने परिवार व समाज को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। बच्चों के नारों जल है तो कल है, पानी नहीं तो कहानी नहीं ने पूरे वातावरण को जागरूक से भर दिया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त मुख्य अध्यापक रमेश कुमार ने कहा कि विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का



सिरसा। जागरूकता रैली निकालते विद्यार्थी।

केंद्र भी होता है, और ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण होते हैं। प्राचार्य मोना पुरी ने कहा कि जल केवल एक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। आज जिस तरह जल स्तर गिरता जा रहा है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए गंभीर संकेत बन सकता है। यदि हम आज सचेत नहीं हुए, तो कल पछताने के अलावा कुछ नहीं

फतेहाबाद पुलिस के चार कर्मचारी हुए सेवानिवृत्त



फतेहाबाद। पुलिस लाइन में आज पुलिस विभाग द्वारा विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने अकाउंट बांध प्रमारी रहे उप-निरीक्षक दयाराम को उनके दीर्घ, निष्कलंक एवं समर्पित सेवाकाल के लिए सम्मानित करते हुए उनके उत्कृष्ट, स्वस्थ एवं सम्मानपूर्ण भविष्य की शुभकामनाएं दीं। इस विदाई समारोह का नेतृत्व कल्याण शाखा प्रमारी निरीक्षक रणवीर सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान पुलिस विभाग के चार अनुभवी अधिकारियों को उनकी दीर्घकालीन, सरहनीय सेवाओं के उपरंत सम्मानपूर्वक सेवानिवृत्त किया गया। समारोह में पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों में उप-निरीक्षक दयाराम, उप-निरीक्षक सुशील कुमार, ऑफिसरी निरीक्षक शेर सिंह तथा ऑफिसरी निरीक्षक केलाराम शामिल हैं। इन सभी अधिकारियों ने अपने सेवाकाल के दौरान कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं अनुकूलनीय अनुशासन का परिचय देते हुए पुलिस विभाग की गरिमा और विश्वास को सदैव बनाए रखा। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने कहा कि सेवानिवृत्त होने वाले सभी अधिकारियों ने अपने सेवाकाल में अनेक चुनौतियों पर परिस्थितियों का सामना करते हुए भी अपने कर्तव्यों का निर्वहण भाव, पूर्ण निष्ठा और निष्कलंकता के साथ निर्वहन किया है। उनकी कार्यशैली, अनुशासन और सेवा भावना ने अनेक पुलिस विभाग के लिए गौरव का विषय है, बल्कि युवा पुलिस कर्मियों के लिए भी प्रेरणास्रोत है। विभाग को उनके अमूल्य योगदान पर गर्व है।

कार्यक्रम फतेहाबाद, टोहाना व हिसार के 11 साहित्यकारों को 'साहित्य गौरव सम्मान' से नवाजा

'छोरी हो क्यूं धन पराया, या बात कठै तै आई, लक्ष्मी रूप कन्या का, क्यूं दोहरी देह बनाई'

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, पंचकूला तथा नरि धरोहर सोसाइटी, मताना, फतेहाबाद के संयुक्त तत्वाधान में फतेहाबाद के सेठ बंदी प्रसाद डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बीघड़ रोड में कवि सम्मेलन तथा साहित्यकार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध साहित्यकार व छायाकार डॉ. ओमप्रकाश कादयान की अध्यक्षता में आयोजित इस साहित्यिक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के तौर पर हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, पंचकूला के निदेशक डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी ने शिरकत की। अति विशिष्ट अतिथि के तौर पर पावर थ्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया, उपकेंद्र,



फतेहाबाद के उपमहाप्रबंधक जितेंद्र कुमार शामिल हुए तथा कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजकीय महिला महाविद्यालय, भोडिया



खेड़ा के प्राचार्य डॉ. शत्रुजीत सिंह रहे। डीएवी स्कूल की प्राचार्य सुनीता मदान ने मेहमानों का स्वागत किया और नरि धरोहर सोसाइटी

समाज का यथार्थ बताया

अस्थापक संघ के प्रधान कवि राजपाल मिताथल ने बेटियों के सम्मान व हक में कुछ यूं सुनाया 'छोरी हो क्यूं धन पराया, या बात कठै तै आई, लक्ष्मी रूप कन्या का, क्यूं दोहरी देह बनाई' हिसार के जुगलान गांव निवासी दिवाकर जरांत ने 'आधुनिकता के इस दौर में, जीवन बना तबाही का फसाना' कहकर समाज का यथार्थ बयां किया।

मुकेश रानी ने फतेहाबाद, टोहाना व हिसार के 11 साहित्यकारों को 'साहित्य गौरव सम्मान' से नवाजा। सम्मानित होने वाले कवि-लेखकों में डॉ. नवल सिंह टोहाना, डॉ. सुमन कादयान हिसार, राजपाल मिताथल, फतेहाबाद, डॉ. सुरेश पंचायिया फतेहाबाद, डॉ. सुदामा शास्त्री फतेहाबाद, सुमनलता सुमन फतेहाबाद, दिवाकर जरांत जुगलान, हिसार, सुरेंद्र कुमार जाण्डली, देवेन्द्र अशोक फतेहाबाद शामिल रहे। इसके अलावा डीएवी स्कूल की कविता पाठ करने सागर व डॉ. सुदामा शास्त्री ने मंच संचालन किया। अकादमी के निदेशक डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी, डॉ. ओमप्रकाश कादयान, जितेंद्र कुमार, डॉ. शत्रुजीत सिंह, सुनीता मदान व

दुनिया की भीड़ में क्यों बढ़ रहा है अकेलापन



देश-दुनिया की आबादी मले ही दिनों-दिन बढ़ रही हो, लेकिन इसके उलट लोगों का अकेलापन भी बढ़ रहा है। अकेलेपन की समस्या विश्वव्यापी है। भारत समेत अनेक देशों के लोग इस समस्या का सामना कर रहे हैं। अकेलेपन का हमारे स्वास्थ्य ही नहीं पूरे जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि इसके कारणों को जाना जाए और इसे दूर करने का हर संभव प्रयास किया जाए।



76,000 लोगों की उनके घर में अकेले रहते हुए मौत हुई। 4,000 लोग ऐसे थे, जिनके मरने के करीब एक महीने के बाद बाहर के लोगों को उनकी डेड बॉडीज मिलीं। जापान में तो अकेलेपन को दूर करने के लिए ज्यादा उम्र के लोग कई बार जान-बूझकर अपराध करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं, जिससे उन्हें सजा मिले और सजा के बाद वे जेल में दूसरे लोगों से मिलकर कुछ बातचीत कर सकें, उनका अकेलापन दूर हो, उनका मन लग सके।

बढ़ रहे हैं एकल परिवार

भारत में भी अकेलापन तेजी से फैल रहा है। इसकी मुख्य वजह है भारतीय समाज में टूटते संयुक्त परिवार। पहले के दौर में हमारे घर-परिवार में साथ रहने वाले अपने माता-पिता, दादा-दादी,

बाजार जाते तो किराने की दुकान या सब्जी की दुकान पर दुकानदार से बातचीत कर लिया करते थे। अड़ोसी-पड़ोसी से उनका हाल-चाल पूछ लिया करते थे। चाय की दुकानों पर जाने-अंजाने लोग भी खूब बातियाते थे। लेकिन अब ऑनलाइन शॉपिंग के बढ़ते ट्रेंड से लोगों का बाजार आना-जाना भी बहुत कम हो गया है। सब इतने व्यस्त हो गए हैं कि किसी के पास समय ही नहीं रह गया है, एक-दूसरे की खबर लेने का।

बच्चे-युवा भी हो रहे प्रभावित

2021 के ग्लोबल सर्वे के मुताबिक, अकेलेपन से प्रभावित होने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश भारत है। इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत के शहरों में 43% लोग अकेलापन महसूस करते हैं। चिंताजनक बात यह है कि 13 से 15 साल की उम्र के 25% बच्चे भी अकेलापन अनुभव कर रहे हैं। सोशल मीडिया की वजह से भी अकेलापन तेजी से बढ़ रहा है। कई स्टडीज में सामने आया है कि सोशल मीडिया की लत, युवाओं में अलगाव, अकेलापन और डिप्रेशन को बढ़ा रही है।

मशीनी हो रही भावनाएं

अकेलापन इसलिए भी बढ़ रहा है कि लोग एक-दूसरे के साथ अपनी भावनाएं साझा नहीं करते हैं। सोशल मीडिया में कोई इमोजी भेजकर खुद को दायित्वमुक्त समझ लेते हैं। आजकल लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किसी की आंखों में आंख डालने की जरूरत नहीं है। किसी का हाथ थामने की जरूरत नहीं है। लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इमोजीज भेजना ही पर्याप्त है। यानी जब हम दुखी महसूस करते हैं तो हमारे साथ किसी की वास्तविक भावनाओं के स्थान पर देरों-देरों इमोजीज होते हैं।

अकेलापन दूर करने का करें प्रयास

हमें बचपन से ही सिर्फ यह सिखाया जाता है कि सफलता ही खुशी का सबसे बड़ा पैमाना है और जीवन में हर कीमत पर सफल होना सबसे जरूरी है। जो सफल है, वह खुश भी रह लेगा। हमें रिश्तों की अहमियत नहीं सिखाई जाती। सफलता और अधिक से अधिक पैसा, सुख-सुविधाएं अर्जित करने की अंधी दौड़ में ज्यादातर लोग अपने रिश्तों को पीछे छोड़ देते हैं। जाहिर है, इससे जीवन में अकेलापन आया ही। अकेलापन किसी सफलता से या दौलत कमाने से या शानदार करियर से नहीं, अपनों के साथ होने से दूर होता है। इसलिए अगर आप भी अकेलापन महसूस करते हैं तो सोशल मीडिया पर ही नहीं अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलने उनके घर जाइए, उन्हें अपने घर बुलाइए। परिवार के साथ समय बिताइए। अंजाना लोगों से भी बात करने में न हिचकचाइए। यही नहीं अगर आपके परिवार में या आस-पास कोई ऐसा व्यक्ति है, जो अकेलापन महसूस कर रहा है तो उससे बात कीजिए। उसके अकेलेपन को दूर करने का प्रयास कीजिए। जरूरत पड़ने पर काउंसलर की मदद भी ले सकते हैं। ऐसा करने से उस व्यक्ति का अकेलापन तो दूर होगा ही, आपको भी आत्मीय खुशी, संतुष्टि मिलेगी। *

कवर स्टोरी

एस. माग्यम शर्मा

यह सही है कि दुनिया में आठ अरब से अधिक और हमारे अपने देश में 140 करोड़ से अधिक लोग रहते हैं। लेकिन दुख की घड़ी में शायद ही एक कंधा ऐसा मिले, जिस पर सिर रखकर हम रो सकें। सोशल मीडिया पर भले ही हमारे हजारों दोस्त होंगे, फॉलोअर्स होंगे, लेकिन असल जिंदगी में एक भी हमारे साथ नहीं होता। यानी आज लोगों की भीड़ में भी हर कोई खुद को अकेला महसूस कर रहा है।

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

अगर कोई शारीरिक बीमारी हो तो इसका असर दूसरों को नजर आता है। अकेलेपन का दुष्प्रभाव धूम्रपान और मोटापे की तरह शरीर पर नजर नहीं आता है। दरअसल, अकेलापन हमारे मन को बीमार बना देता है। अकेलापन एक दिन में 15 सिगरेट पीने से भी ज्यादा खतरनाक असर हमारे स्वास्थ्य पर डालता है। अकेलापन समय से पहले मृत्यु के खतरे को 25% तक बढ़ा देता है। अकेलेपन से ब्रेन स्ट्रोक और हृदय रोग का खतरा 30% तक बढ़ता है। यह डिमेंशिया के खतरे को 50% तक बढ़ा देता है, इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि समय रहते अकेलेपन की इस बीमारी को पहचान लें और यह जानें कि कहीं आप भी अकेलेपन के अंधेरे में खोते तो नहीं जा रहे हैं।

दुनिया भर में लोग हैं परेशान

वर्ष 2023 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अकेलेपन को एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट घोषित किया था। अकेलेपन को परिभाषित करते हुए डब्ल्यूएचओ ने कहा था कि अकेलापन व्यक्ति की अपनी भावनात्मक पीड़ा है, जो सामाजिक अलगाव और सार्थक रिश्तों की कमी से पैदा होती है। आज के दौर में अकेलापन दुनिया भर में एक गंभीर बीमारी का रूप ले चुका है। जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में कई लोग इस कदर अकेले हो चुके हैं कि अगर उनकी मृत्यु भी हो जाए तो कई-कई दिनों तक बाहरी दुनिया को उनकी मौत के बारे में पता ही नहीं चलता।

वहां से आई खबरों के अनुसार पिछले साल जापान में करीब



कई देशों में हो रही नई पहल
अकेलेपन की समस्या से निपटने के लिए अलग-अलग देशों में अब कई तरह की पहल की जा रही है। जैसे दक्षिण कोरिया में बुजुर्गों के लिए हेल्पी केम्प चलाई जा रही हैं। यह एक कैम्प है, जिसमें बुजुर्गों को अंजान लोगों के साथ बैठकर धूमने जा सकते हैं। उनसे बातचीत कर सकते हैं, अपने सुख-दुख साझा कर सकते हैं। इससे उन्हें अपना अकेलापन दूर करने में मदद मिलती है। इसी तरह अकेलेपन की समस्या के समाधान को तलाशने के लिए ब्रिटेन ने वर्ष 2018 में ही लॉन्गलैन्स मिनिस्टर की नियुक्ति शुरू कर दी थी। एक अलग मंत्रालय, एक अलग नौकरी, जो सिर्फ यह देखेगा कि देश में लोगों के अकेलेपन को कैसे दूर किया जा सकता है? वहां अकेलेपन से जूझ रहे लोगों को काउंसिलिंग और मेडिकल सपोर्ट उपलब्ध कराए जाते हैं।

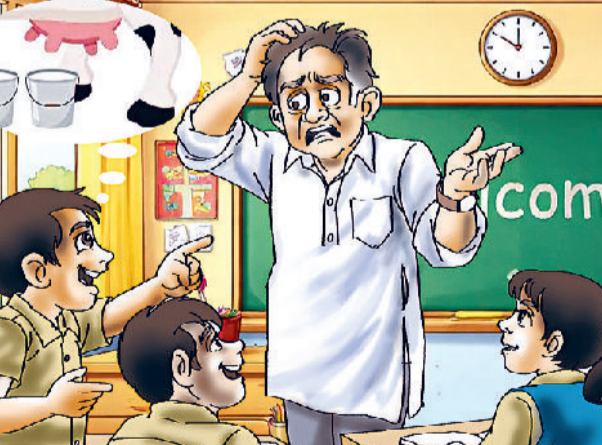
लक्ष्य अंशुमान खरे

गणित में बचपन से ही हम बगैर होशियार होकर भी होशियार थे। न मालूम गणित के मास्साब कहाँ-कहाँ से सवाल लाते थे, लेकिन पिटते-पिटते किसी तरह गणित में पास कर दिए जाते थे। घर वालों की तमना डॉक्टर, इंजीनियर बनाने की थी। कक्षा में हमेशा अपराधी की तरह बैठे रहते थे। गणित के गुरु जी हमेशा हमें अंतरराष्ट्रीय गणितज्ञ बनाने का मजाक करते रहते थे। पर हमें कुछ भी समझ नहीं आता। हमारे गणित के गुरु जी फिरकी लेते थे कि मुझे भगवान भी नहीं समझा सकते। गणित की क्लास हमारे लिए आफत से कम नहीं थी। मास्साब के सवाल भी माशाअल्लाह अद्भूत होते थे। एक औरत एक काम को चार घंटे में पूरा कर लेती है तो बताओ उसी काम को आठ औरतें कितने समय में पूरा करेंगी? मैं कहता, 'आठ औरतें काम तो पूरा कर नहीं पाएंगी। हां, रायता जरूर फैला देगी।'

सवाल से सवाल निकालने की कला में हमारे मास्साब का कोई सानी नहीं था। कपड़े पर अटक गए तो उसी से जुड़े सवाल पर सवाल पछने लगते, 'बताओ बच्चों, अगर एक साड़ी घूंप में एक घंटे में सूखती है तो चार साड़ियां सूखने में कितना समय लेंगी?' बहुत सरल सवाल सोचकर मैं हाथ उठाकर बोल पड़ा, 'वैरी सिंपल, चार घंटे।' मास्साब जवाब सुनकर आपसे बाहर हो गए। मैं समझ नहीं पा रहा था, मास्साब को सीधा-सा गुणा करना नहीं आता क्या? मैंने हिम्मत करके एक सवाल पूछ लिया, 'गुरु जी, अगर एक गांव में एक गांव है और वह दो लीटर दूध देती है तो बताइए गांव वाले चालीस-चालीस लीटर दूध बाहर कैसे सप्लाई करते हैं?' मास्साब का माथा ठनका और तमतमा कर क्लास से बाहर चले गए। मेरा सवाल

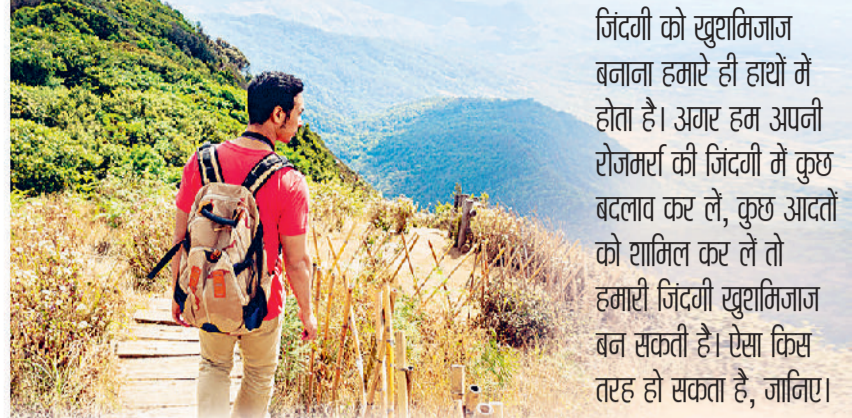
गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाए कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है।

प्रतिभा सम्मान



अनुत्तरित रह गया। मेरे सवाल पर क्लास में चर्चा होने लगी। सब हैरान। प्रश्न तो उचित है। मास्साब नाराज क्यों हो गए? गणित के मास्साब का वैसे भी स्कूल में काफी जलवा था। प्रधानाचार्य से लेकर सभी अध्यापक और छात्र उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। दूध की सप्लाई का सवाल गणित के मास्साब के गले की फांस बन गया। कुछ दोस्तों ने कहा, 'पानी मिला लेते होंगे।' पर इतना पानी मिलाकर दूध रह ही नहीं पाएगा। सब पानी-पानी हो जाएगा। मास्साब इस बात को पता लगाने में जी-जान से जुट गए कि इस प्रश्न को किसके इशारे पर उनसे पूछा गया है। यह किस अध्यापक की साजिश है, पता लगाना जरूरी है। गणित के मास्साब को पहली बार किसी

सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाए कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है। इस तरह के सवाल किसी किताब में नहीं होते हैं। मास्साब मेरे प्रश्न में उलझते जा रहे थे। मैं उनकी तरफ आशापरी दृष्टि से टकटकी लगाकर धैर्य से देखता रहता था। मेरे प्रश्न को दूर-दूर तक पहुंचाया गया। कहीं से समस्या का समाधान निकले। प्रधानाचार्य जी ने ऐसा गांव पहचाना, जहां के लोग दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध बनाने में सफल हुए हैं। उन्होंने गांव के लोगों को सम्मानित करने की योजना बनाई। गांव के प्रधान गांव को सम्मानित करने के नाम से उत्साहित दिखे। ऐसे प्रतिभाशाली लोगों की ओर सबका ध्यान खींचने के लिए मुझे भी मालाओं से लाद दिया गया। क्षेत्र के विधायक, सांसद, सभी ने गांव को सम्मानित करने में रुचि दिखाई। श्वेत क्रांति के लिए पूरे गांव के लोगों को बधाई देने वालों का तांता लग गया। शासन, प्रशासन ने भी गांव को सम्मानित करने के सुर में सुर मिला दिया। जिलाधिकारी से लेकर सारे कर्मचारी सुलेदी से सम्मान समारोह की तैयारी में जुट गए हैं। लेकिन मैं और गणित के मास्साब प्रश्न अनुत्तरित रहने से चिंतित हैं। हम दोनों शून्य में उतर खोजने की कोशिश कर रहे हैं। दुग्ध क्रांति की गुत्थी उलझती जा रही है। सुना है कि गांव के सम्मान समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री भी आएंगे और ऐसी प्रतिभाओं को सम्मानित करेंगे, जो दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध सप्लाई करने का 'हुनर' जानते हैं। *



जीने के अंदाज में करें बदलाव खुशमिजाज हो जाएगी जिंदगी

लाइफस्टाइल शिखर चंद जैन

हमारा दिमाग ही हमारी सोच और नजरिए का स्रोत होता है। जब दिमाग अशांत या उद्वेलित रहता है तो हमें हर चीज में उथल-पुथल, नकारात्मकता और बुराई नजर आती है। लेकिन जब दिमाग शांत रहता है, हम खुशमिजाज रहते हैं तो हमें हर चीज सकारात्मक अच्छी और सही लगती है। खुशमिजाजी और सुकून के लिए कुछ बातें और आदतें अपनानी जरूरी हैं।

लोगों से बनाए अच्छे संबंध

भले ही सबको खुश रखना दुनिया का सबसे कठिन काम है लेकिन सबके साथ खुश रहना दुनिया का सबसे आसान काम है। हार्वर्ड स्टडी ऑफ एडवल्ड डेवलपमेंट के डायरेक्टर और मनोचिकित्सक रॉबर्ट वाल्डिंगर का कहना है कि लोगों के साथ मजबूत और मधुर संबंध खुशी की प्रमुख वजह बन सकते हैं। ये लोग रोमांटिक पार्टनर, आपके दोस्त, बच्चे, सहकर्मी, पड़ोसी, रिश्तेदार या भाई-बहन कोई भी हो सकते हैं। भले ही हम सब स्वतंत्रता को खास मानते हैं, लेकिन यह ना भूलें कि हम सब एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। जब हम अपने इर्द-गिर्द मौजूद लोगों के साथ अच्छे संबंध रखते हैं तो मानसिक खुशी तो मिलती ही है, एक बड़ा सपोर्ट सिस्टम भी मिलता है, जो हमें हर तरह से सुकून देता है।

खुशी मिलने की एक महत्वपूर्ण वजह है। पालतू के साथ समय बिताने

वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए एक ताजा अध्ययन में पाया गया कि पालतू जानवर के साथ बिताया गया 10 मिनट का समय भी दिमाग को सुकून देने वाला होता है। इससे कार्टिसोल नामक स्ट्रेस हार्मोन का स्तर गिरता है। अमेरिकी नागरिकों द्वारा किए गए एक शोध में पाया गया कि सबसे ज्यादा सुकून देने वाले पालतू कुत्ते होते हैं।

कुदरत को निहारें

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोधकर्ताओं ने 90 स्टूडेंट्स पर किए गए शोध में पाया कि कुदरत को निहारना मन को सुकून देने वाला एहसास होता है। जब हम पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को निहारते हैं तो हमारा ध्यान परेशानियों से हटकर पूरी तरह उन्हीं पर लग जाता है। इससे दिमाग को सुकून मिलता है।

फल-सब्जी ज्यादा खाएं

सोशल साइंस एंड मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित ताजातरीन स्टडी रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रचुर मात्रा में फल और सब्जी खाने से खुशमिजाजी और सुकून मिलता है। इसलिए रोज कच्ची सब्जियों का सलाद और फल खाएं। सबसे बड़ी बात यह है कि अगर आप खान-पान, आराम और सोने का समय नियंत्रित कर लेते हैं तो आपका हैप्पीनेस लेवल बढ़ जाता है। न्यूट्रिशन, एक्सरसाइज और रेस्ट, खुशी के मूल मंत्र हैं।

वाटर बॉडीज के पास जाएं

जर्नल आफ एनवॉयनमेंटल साइकोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि पानी के संग्रह स्थल नजदीक रहने से लोगों में पॉजिटिव इमोशंस का संचार होता है। स्विमिंग पूल, समुद्र या नदी के किनारे खड़े होकर पानी की हलचल को निहारना सुकून देता है। इससे स्ट्रेस लेवल भी कम होता है। *



अजनबियों से करें बातचीत

ओटावा (कनाडा) की काल्टन यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञानी जॉन जेलेवेंसकी कहते हैं कि आपको एक्सप्लोर्ट होना चाहिए। अंतर्मुखी, गंभीर और चुप्पी साध कर रहने वाले लोग उदास रहते हैं, जबकि सबसे आसानी से चुल-मिल जाने वाले और अजनबी लोगों से बातचीत करने की कला जानने वाले अकसर खुशमिजाज रहते हैं। साथ ही ऐसे लोग आसानी से अपना सोशल सर्किल और बिजनेस सर्किल भी बढ़ा लेते हैं, जिससे इन्हें सफलता मिलती है। जाहिर है, सफलता भी

इन पर भी करें अमल

जीवन के हर आयाम को बराबर समय देने की कोशिश करें, जैसे परिवार, व्यापार, मित्र, जीवनसाथी, समाज आदि क्षेत्रों में सक्रिय रहें। हसी-मजाक करें, लेकिन दूसरों का मजाक ना उड़ाएं। कई बार हसने स्थिति बिगड़ जाती है और तनाव का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा आप अनुभवों पर पैसा और समय खर्च करें। उन कार्यों को करें, जो आपको कभी नहीं किया और देखा। जैसे हॉर्स राइडिंग करना, गुडवुड देखना, अंडरवाटर स्पॉट देखना या इस्त्रम शामिल होना, थ्रिप्टर में जाकर नाटक देखना, किसी बर्फाले स्थान की यात्रा करना आदि।

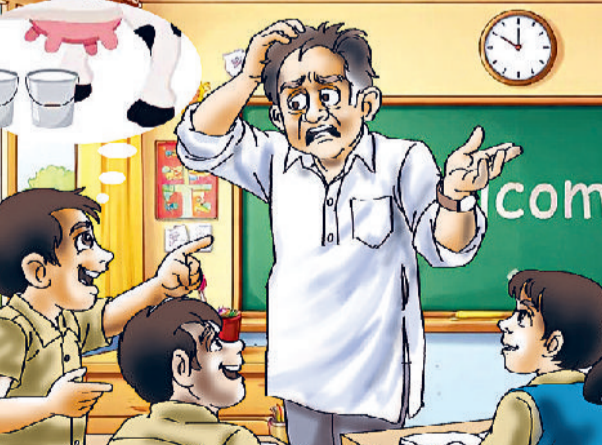


लक्ष्य अंशुमान खरे

गणित में बचपन से ही हम बगैर होशियार होकर भी होशियार थे। न मालूम गणित के मास्साब कहाँ-कहाँ से सवाल लाते थे, लेकिन पिटते-पिटते किसी तरह गणित में पास कर दिए जाते थे। घर वालों की तमना डॉक्टर, इंजीनियर बनाने की थी। कक्षा में हमेशा अपराधी की तरह बैठे रहते थे। गणित के गुरु जी हमेशा हमें अंतरराष्ट्रीय गणितज्ञ बनाने का मजाक करते रहते थे। पर हमें कुछ भी समझ नहीं आता। हमारे गणित के गुरु जी फिरकी लेते थे कि मुझे भगवान भी नहीं समझा सकते। गणित की क्लास हमारे लिए आफत से कम नहीं थी। मास्साब के सवाल भी माशाअल्लाह अद्भूत होते थे। एक औरत एक काम को चार घंटे में पूरा कर लेती है तो बताओ उसी काम को आठ औरतें कितने समय में पूरा करेंगी? मैं कहता, 'आठ औरतें काम तो पूरा कर नहीं पाएंगी। हां, रायता जरूर फैला देगी।'

सवाल से सवाल निकालने की कला में हमारे मास्साब का कोई सानी नहीं था। कपड़े पर अटक गए तो उसी से जुड़े सवाल पर सवाल पछने लगते, 'बताओ बच्चों, अगर एक साड़ी घूंप में एक घंटे में सूखती है तो चार साड़ियां सूखने में कितना समय लेंगी?'

प्रतिभा सम्मान



अनुत्तरित रह गया। मेरे सवाल पर क्लास में चर्चा होने लगी। सब हैरान। प्रश्न तो उचित है। मास्साब नाराज क्यों हो गए? गणित के मास्साब का वैसे भी स्कूल में काफी जलवा था। प्रधानाचार्य से लेकर सभी अध्यापक और छात्र उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। दूध की सप्लाई का सवाल गणित के मास्साब के गले की फांस बन गया। कुछ दोस्तों ने कहा, 'पानी मिला लेते होंगे।' पर इतना पानी मिलाकर दूध रह ही नहीं पाएगा। सब पानी-पानी हो जाएगा। मास्साब इस बात को पता लगाने में जी-जान से जुट गए कि इस प्रश्न को किसके इशारे पर उनसे पूछा गया है। यह किस अध्यापक की साजिश है, पता लगाना जरूरी है। गणित के मास्साब को पहली बार किसी

सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाए कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है। इस तरह के सवाल किसी किताब में नहीं होते हैं। मास्साब मेरे प्रश्न में उलझते जा रहे थे। मैं उनकी तरफ आशापरी दृष्टि से टकटकी लगाकर धैर्य से देखता रहता था। मेरे प्रश्न को दूर-दूर तक पहुंचाया गया। कहीं से समस्या का समाधान निकले। प्रधानाचार्य जी ने ऐसा गांव पहचाना, जहां के लोग दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध बनाने में सफल हुए हैं। उन्होंने गांव के लोगों को सम्मानित करने की योजना बनाई। गांव के प्रधान गांव को सम्मानित करने के नाम से उत्साहित दिखे। ऐसे प्रतिभाशाली लोगों की ओर सबका ध्यान खींचने के लिए मुझे भी मालाओं से लाद दिया गया। क्षेत्र के विधायक, सांसद, सभी ने गांव को सम्मानित करने में रुचि दिखाई। श्वेत क्रांति के लिए पूरे गांव के लोगों को बधाई देने वालों का तांता लग गया। शासन, प्रशासन ने भी गांव को सम्मानित करने के सुर में सुर मिला दिया। जिलाधिकारी से लेकर सारे कर्मचारी सुलेदी से सम्मान समारोह की तैयारी में जुट गए हैं। लेकिन मैं और गणित के मास्साब प्रश्न अनुत्तरित रहने से चिंतित हैं। हम दोनों शून्य में उतर खोजने की कोशिश कर रहे हैं। दुग्ध क्रांति की गुत्थी उलझती जा रही है। सुना है कि गांव के सम्मान समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री भी आएंगे और ऐसी प्रतिभाओं को सम्मानित करेंगे, जो दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध सप्लाई करने का 'हुनर' जानते हैं। *

लक्ष्य अंशुमान खरे

स्पताल जाते समय सड़क की भीड़ और अब वहां सैकड़ों की संख्या में कतारबद्ध खड़े लोगों को देखकर बाबूजी बोले, 'महानगरों के सड़कों पर दौड़ती-हांफते वाहनों के साथ, यहां का आम जीवन थरथरते हुए गुजरता है।' 'राजधानी में अच्छी सुविधा मिलेगी, यह सोचकर सभी राज्यों से लोग आकर यहां बसना चाहते हैं और बसते भी हैं, इसलिए भीड़ तो होगी ही।' बाबूजी की ओर देखकर मयंक धीरे से बोला। बाबूजी बड़ी मुश्किल से इलाज के लिए अपना घर और गांव छोड़कर अपने बेटे मयंक के पास इस महानगर में आए थे। कहीं बाबूजी गांव वापस जाने की जिद न करने लग जाएं, यह खयाल आते ही मयंक बोला, 'बाबूजी एक बार आपका अच्छी तरह से इलाज हो जाए बस और हमें क्या चाहिए!' 'अरे बेटा! मुझे लगता है यहां तो हम और भी बीमार हो जाएंगे। स्वस्थ क्या खाक होगा?' कहकर वे तेज-तेज खानसे लगे। उनकी आंखें भी लाल हो गईं। मयंक ने घबराकर इधर-उधर देखा। अस्पताल का प्रतीक्षालय पूरी तरह से भरा हुआ था। एक भी सीट खाली नहीं थी, जहां बाबूजी को वह बैठा सके। एक व्यक्ति जो उसी की तरह दिख रहा था। मयंक ने उसे आग्रहपूर्ण नजरों से देखा। उस व्यक्ति ने खड़े होकर बाबूजी को बिटाने का इशारा किया। मयंक ने बाबूजी को बिटाना और दोनों हाथ जोड़कर उस व्यक्ति का आभार व्यक्त किया और बाबूजी से

लक्ष्य अंशुमान खरे

बोला, 'मैं अभी आया।' फिर वह शीघ्रता से अस्पताल से बाहर निकल गया। थोड़ी ही देर में पानी की बोतल लेकर आया और बाबूजी को पानी पिलाकर बोला, 'आप चिंता न करें, हम जिस डॉक्टर से दिखाने के लिए आए हैं, उनका बहुत नाम है। उनके इलाज से कितना भी पुराना रोग, ठीक हो जाता है।' बाबूजी, बेटे की बात सुनकर बोले, 'अरे! यह तो बुढ़ापे का रोग है। खानसा-खंखारना तो लक्षण है, बुढ़ापे का। लेकिन बेटा, मेरी एक बात ध्यान से सुन, यह शहर बड़ा है, डॉक्टर बड़ा है पर हम तो बड़े लोग नहीं हैं न! बड़ा शहर और इसकी सुविधाएं बड़े लोगों के लिए होती हैं। हम इनके फोटो देखकर अपने से झूठ बोलते हैं कि मैं भी इसका हिस्सा हूँ। पर हमारी इतनी औकात नहीं है।' मयंक की आंखें गीली हो गईं। वह बोला, 'सच कह रहे हैं बाबूजी! बीस साल की नौकरी में क्या ही कर लिया मैंने? आज तक बीवी बच्चों को इस शहर में एक छत भी न दे सका।' बेटे को इस तरह उदास देखकर बाबूजी उसके लिए पर धर रखकर बोले, 'बेटा हम अपने गांव चलेंगे। वहीं के अंग्रेजी स्कूल में मेरी पोती पढ़ेगी और मैं अपने बड़े से आंगन में नीम की छांव तले बैठकर उसके साथ खेल्ंगा और' तभी नर्स ने टोकन नंबर बहतर रामजस को आवाज दी। मयंक बाबूजी का हाथ थाम कर बोला, 'चलिए बाबूजी, अपना नंबर आ गया।' *

अलग मिजाज की कहानियां

रिश्त कथाकार हबीब कैफी की चुनी हुई सत्रह कहानियां 'तमना खानम' पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। करीब साढ़े पांच दशक के कालखंड में लिखी गई ये कहानियां, हमें समाज के अलग-अलग तबके से ताल्लुक रखने वाली स्त्रियों की जिंदगी से रूबरू कराती हैं। कहीं पुरुषत्व के दंभ से दमित लेकिन फिर भी उसके साथ रहने की विवश बंधी नजर आती है (औरत),

तमना खानम

तो कहीं गणिकाओं के जीवन की त्रासदी भोगती मरजीना की कराह सुनाई पड़ती है (मरजीना)। 'तमना खानम' कहानी में उच्च वर्ग की महिला तमना को अपनी जिंदगी की पेचीदगियों को अपने अंदाज में सुलझाते देखा जा सकता है। बहुत अलग मिजाज की ये कहानियां, कहीं-कहीं उर्दू के मशहूर कथाकार मंटे की याद दिलाती हैं। इन कहानियों में भाषा की रवानगी भी देखने लायक है। *



जरा सोचिए, प्रकृति और जीवन में रंग और सुगंध न हों तो यह दुनिया कितनी नीरस हो जाएगी। ये फूल ही तो हैं, जो हमारी दुनिया को रंगीन बनाते हैं, खुशबू से महकाते हैं। वासंती मौसम में तो बाग-बगीचों में फूलों की बहार ही आ जाती है। ऐसे में आइए, बात करें फूलों की...

वासंती मौसम में बात फूलों की



भाषा सुगंध होती है। ये हम मनुष्यों से अपनी मादक महक के माध्यम से बतियाते हैं। खुशबू से वे अपनी उपस्थिति का एहसास कराते हैं। हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सभी फूल अपनी अलग-अलग खुशबू फैलाते हैं। कुछ मधुमक्खियों और तितलियों को बुलाने के लिए और कुछ कीड़े-मकोड़ों को दूर भगाने के लिए। वैसे फूलों के पौधों समेत सभी फूलों, अपनी जड़ों और फंगस के नेटवर्क के जरिए भी एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और पोषक तत्वों या पानी की कमी जैसी जानकारी साझा करते हैं। साथ ही हवा में

कि पौधे इलेक्ट्रिक सिग्नल्स के जरिए भी संवाद करते हैं। हमें इसलिए भाते हैं फूल: फूल हमें इसलिए अच्छे लगते हैं, क्योंकि उनके सुंदर रंग, मनमोहक सुगंध और आकर्षक बनावट हमारे दिमाग में खुशी के हार्मोन (डोपामाइन और सेरोटोनिन) पैदा करते हैं, जिससे हमें शांति और ताजगी महसूस होती है। फूल प्रकृति की सुंदरता, जीवन की सरसता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माने जाते हैं। इतना ही नहीं, ये देवा के रूप में भी महत्वपूर्ण होते हैं। पौराणिक काल में किसी स्थान पर फूलों की मौजूदगी इंसानों को यह संकेत देती थी कि आस-पास पानी, पोषक तत्व और भीजन (फल) उपलब्ध हैं। यही वजह है कि मानव सभ्यता के विकास से ही फूलों से हमारा खूबसूरत रंग, इनकी मुलायमियत और सिमेट्रिकल बनावट आंखों को बहुत आकर्षित करती है।

कम नहीं सांस्कृतिक-प्राकृतिक महत्व: फूलों का सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व भी है। ये खुशी, प्रेम, सम्मान और उत्सव के प्रतीक माने जाते हैं, इसलिए जन्मदिन, शादियों और अन्य शुभ अवसरों पर फूलों को बुके, माला, गुच्छ के रूप में भेंट किया जाता है। वास्तु और ज्योतिष के अनुसार, फूल घर में सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं और नकारात्मकता को दूर करते हैं, जिससे खुशहाली आती है। *

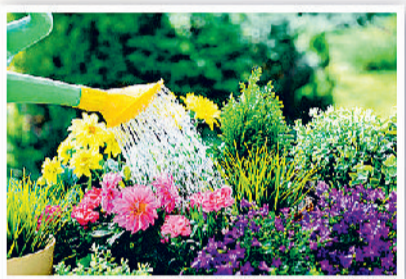
प्रकृति शिखर चंद जैन

हर ऋतु में प्रकृति हमारे लिए कई बेशकीमती सौगातें लेकर आती है। प्रकृति की इन सौगातों में कुछ बेहद खूबसूरत फूल भी शामिल हैं। फूलों की यह मनमोहक दुनिया, हमें एहसास कराती है कि जीवन में रंग और खुशबू का कितना महत्व है। हर फूल अपनी जगह खास है, चाहे वह सड़क किनारे खिला छोटा-सा अनाम फूल हो या किसी बगीचे में खिला राजसी गुलाब। अगली बार जब आप किसी फूल को देखें, तो रुककर उसकी मोहक बनावट, उसकी सुगंध के बारे में जरूर सोचें। इन्हें जितना गौर से, प्यार से देखेंगे आपको इनसे उतना ही ज्यादा लगाव हो जाएगा।

संभालें नाजूक फूलों को: फूल हमारी धरती को खूबसूरती तो प्रदान करते ही हैं। इसके अलावा कई कोट-पतंगों को अपना रस, कई औषधीय लाभ और हमें खुशी का अहसास भी कराते हैं। ये मधुमक्खियों और तितलियों को आकर्षित करते हैं, जिससे परागण होता है। इससे पौधे बीज बना पाते हैं और नए पौधे उगते हैं। इस तरह फूल हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम उनकी

रक्षा करें। ज्यादा कुछ नहीं तो इतना तो कर ही सकते हैं कि हम बिना कारण फूलों को न तोड़ें। जब हम फूल तोड़ते हैं, तो वह पर्याप्त मात्रा में बीज नहीं बना पाते और नए पौधे नहीं उग पाते हैं। फूलों की हिफाजत की शुरुआत अपने घर से करें। घर के गमलों में लगे फूलों वाले पौधों को नियमित तौर पर पानी दें और उन्हें कुछ समय के लिए सूरज की रोशनी में भी रखें। तितलियों, मधुमक्खियों और धीरों को फूलों पर बैठकर उनका रस चूसने दें। उन्हें भगाने का प्रयास न करें। न भूलें कि इससे उन कीटों को भोजन तो मिलता ही है, उस फूल वाले पौधे का परागण भी होता है। प्रकृति का सम्मान करें और अधिक से अधिक फूलों के पौधे लगाएं ताकि हमारे आस-पास हमेशा फूल महकते रहें।

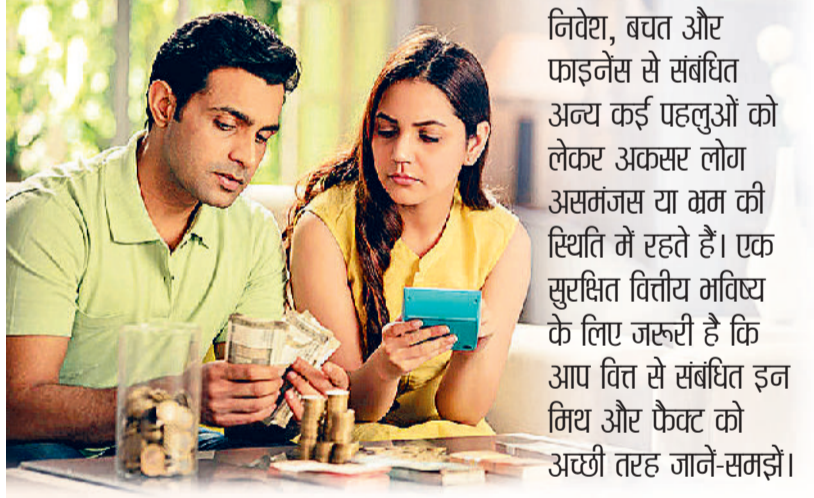
बात भी करते हैं फूल: फूलों की मूल



रसायन छोड़कर भी वे संवाद करते हैं। जब किसी पौधे पर हानिकारक कीट हमला करते हैं तो वह हवा में कुछ रसायन छोड़ते हैं, जिसे आस-पास के दूसरे पौधे महसूस कर लेते हैं और अपनी सुरक्षा के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रसिद्ध भारतीय वनस्पति विज्ञानी सर जगदीश चंद्र बोस ने बताया था

आर्थिक लाभ भी कराते हैं फूल

फूलों को पसंद किए जाने की एक वजह यह भी है कि ये लाखों लोगों को आर्थिक लाभ भी कराते हैं। कोई फूल उगा कर, कोई इन्हें बेच कर, कोई इन्हें निर्यात करके और कोई इनसे सजावटी सामान, मालाएं और बुके आदि बनाकर धनार्जन करता है। भारत में फूलों का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है, जिसका बाजार 2022 में लगभग 23,000 करोड़ रुपये का था और 2028 तक 46,700 करोड़ रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है। बंगलुरु, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल प्रमुख पुष्प उत्पादक राज्य हैं। गुलाब, गेंदा, राजनीगंधा और ऑर्किड जैसे फूलों की मांग दुनिया भर में सबसे अधिक है। भारत के फूल संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, नॉर्वे, जापान, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया सहित कई देशों में भी भेजे जाते हैं।



निवेश, बचत और फाइनेंस से संबंधित अन्य कई पहलुओं को लेकर अक्सर लोग असमंजस या भ्रम की स्थिति में रहते हैं। एक सुरक्षित वित्तीय भविष्य के लिए जरूरी है कि आप वित्त से संबंधित इन मिथ और फैक्ट को अच्छी तरह जानें-समझें।

समृद्ध जीवन के लिए समझें फाइनेंस से जुड़े मिथ-फैक्ट

संज्ञान अंजु जैन

हमारे मन में पैसों को लेकर पारंपरिक तौर पर कई ऐसी धारणाएं बैठा दी गई हैं, जो भ्रम अच्छी रखने के लिए ऐसे भ्रमों और उनसे जुड़े सच के बारे में जानना जरूरी है। इससे आप सुखी और समृद्ध रहेंगे।

मिथ: अगर आपको इनकम ज्यादा है तो आप अमीर हो ही जाएंगे।

फैक्ट: अमीर होना सिर्फ इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि इस पर भी निर्भर करता है कि आप कितना बचाते हैं और कितनी समझदारी से निवेश करते हैं। मार्गन हाउसेल अपनी किताब 'द साइकोलॉजी ऑफ़ मनी' में लिखते हैं कि असली धन वह है, जो लोगों को सामने दिखाई नहीं देता बल्कि जिसे आपने अच्छी जगह निवेश कर रखा है। जैसे जमीन-जायदाद, शेयर, सोना, चांदी, एफडी, म्यूचुअल फंड आदि।

मिथ: घर खरीदना हमेशा ही एक बेहतरीन संपत्ति मानी जाती है।

फैक्ट: नहीं, अगर घर का मॉटेन्स बहुत ज्यादा है, आपके कार्यस्थल से दूर है, डेली शॉपिंग की सुविधा नजदीक नहीं है या इसकी रीसेल वैल्यू बढ़ने वाली नहीं है तो आपके लिए यह नुकसानदायक ही होगा। रॉबर्ट क्रियासाकी अपनी पुस्तक 'रिच डेड-पुअर डेड' में बताते हैं कि अगर आपका घर आपकी जेब से विभिन्न मदों में पैसा निकाल रहा है तो वह एक लायबिलिटी है, एसेट नहीं। एसेट वह है, जो आपकी जेब में पैसा डाले।

मिथ: निवेश करने के लिए बहुत सारे पैसों की



जरूरत होती है।

फैक्ट: निवेश के लिए इसकी आदत और खर्च पर नियंत्रण जरूरी होता है। पुस्तक 'द रिचिस्ट मेन इन बेबीलोन' के अनुसार, अपनी कमाई का कम से कम 10 प्रतिशत हिस्सा खुद के लिए बचाकर निवेश की शुरुआत करना ही सबसे बड़ी रणनीति है। 'कंपाउंडिंग' की शक्ति कम पैसों से भी बड़ा फंड बना सकती है।

मिथ: कर्ज हमेशा नुकसानदायक ही होता है।

फैक्ट: बिल्कुल नहीं। सफल निवेशक हमेशा जोखिम कम करने पर ध्यान देते हैं। बेंजामिन ग्राहम की पुस्तक 'द इंटेलिजेंट इन्वेस्टर' सिखाती है कि अपनी पूंजी की सुरक्षा का ख्याल रखना



तरीका है। शेयर बाजार में 'कब' निवेश करना है, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि आप 'कितने समय' तक निवेशित रहते हैं, क्योंकि निरंतरता ही वैश्व क्रिएशन की असली कुंजी है। बाजार में अधिक समय बिताने से लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज और धैर्य के कारण बेहतर रिटर्न मिलता है, जो पोर्टफोलियो को बढ़ने का मौका देता है। *

(वित्तीय सलाहकार प्रदीप अग्रवाल और चार्टर्ड अकाउंटेंट शुभम तोदी से बातचीत पर आधारित)

बॉलीवुड टैंड डी. जे. नंदन

कई फिल्मी गीत ऐसे होते हैं, जो सीधे दिल में उतरते हैं। बीते दौर के सदाबहार गीतों पर यह बात पूरी तरह लागू होती है। ये गाने सुनने के दौरान ही नहीं बल्कि उसके बाद भी देर तक दिलो-दिमाग में गूंजते रहते हैं। अब ऐसे गीत कम ही बनते हैं। आज ऐसे गीत कम इसलिए नहीं हैं कि प्रतिभा खत्म हो गई है, बल्कि इसलिए कि दिल तक पहुंचने का रास्ता बदल गया है और यह छोटा भी कर दिया गया है। अगर हम आज के बॉलीवुड गीत-संगीत को ध्यान से सुनें, तो साफ पता चलता है कि मंद सपत्क यानी नीचे सुर में गाए गए, ठहरे हुए, भावप्रधान और गहराई वाले गीत अब अपवाद बनते जा रहे हैं।

सदाबहार गीतों का दौर: बीते दौर के गीतों को सुनते हुए एक सुकून, एक ठहराव-सा महसूस होता है। मसलन, फिल्म 'वो कौन थी' के इस गीत पर गौर करें, 'लग जा गले...' (स्वर-लता मंगेशकर, संगीत-मदन मोहन) यह गीत सुकून की पराकाष्ठा पर पहुंचता है। आवाज में न कोई जल्दबाजी है, न दिखावा। बस एक अंतिम आग्रह, जो सर्गोशी में भी अमर हो गया। इसी



'अमर प्रेम' का गीत 'चिगारी कोई भड़के' तरह फिल्म 'अमर प्रेम' का 'चिगारी कोई भड़के...' (स्वर-किशोर कुमार, संगीत-आर. डी. बर्मन), किशोर कुमार का यह गीत यह साबित करता है कि मध्यम और नीचा सुर कमजोरी नहीं, गीत की ताकत भी होती है। 'अभी न जाओ छोड़कर...' (फिल्म 'हम दोनों', स्वर-मोहम्मद रफी और आशा भोसले, संगीत-जयदेव) गीत को सुनें तो इस गीत में संवाद है, आग्रह है और प्रेम का सपथ उठराव है। सुर इतने संयमित हैं कि आज भी इस गीत को सुनते हुए लोग इसमें खो जाते हैं। ऐसे ही 'कहीं दूर जब दिन ढल जाए...' (फिल्म 'आनंद', स्वर-मुकेश, संगीत- सलिल चौधरी) गीत दिन और जीवन- दोनों के ढलने का संगीतात्मक रूपक है। और इसी तरह 'वो शाम कुछ अजीब थी...' (फिल्म 'खामोशी', स्वर-किशोर कुमार, संगीत- हेमंत कुमार) गीत में सुर सिर्फ चलते ही नहीं, ठहरते भी हैं। यही ठहराव इस गीत की आत्मा है।

क्यों कम बन रहे ऐसे गीत: सवाल यह है कि आज के समय में बीते दौर की तरह सुकूनदायक, रूहानी और ठहराव भरे गीत क्यों नहीं बनते? खोजने पर इसके कई कारण निकलकर सामने



'हम दोनों' का गीत 'अभी न जाओ...' 'वो कौन थी' का गीत 'लग जा गले...'

अब क्यों नहीं बन पाते रूहानी सुकून देते गीत

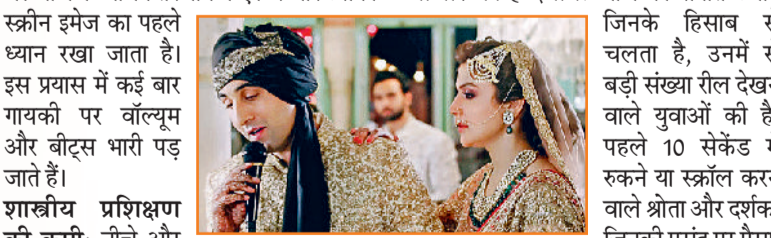
पुराने फिल्मी गीतों को आज भी सुनें, तो ऐसा लगता है मानो किसी ने कानों में मिश्री घोल दी हो। ठहराव और सकून से भरे ये गीत सीधे रूह में उतरते हैं। आज ऐसे गीत कम ही बनते हैं। बॉलीवुड सॉन्व्स के इस बदले हुए ट्रेड पर एक नजर।

आते हैं। जैसे-आज के गीत 'सुनाई देते' के लिए बनाए जाते हैं, 'महसूस होने' के लिए नहीं। तेज बीट्स और ऊंचे सुर तुरंत ध्यान खींचते हैं, जबकि नीचे सुर धीरे और स्थायी असर करते हैं। आज की फास्ट लाइफ, मोबाइल स्पीकर, रील्स और जिम प्लेलिस्ट को ध्यान में रखकर गाय जा रहे गीतों में वो सुकून, वो ठहराव महसूस करना मुश्किल है। आज के संकेत में म्यूजिक कंपनियां चाहती हैं पहले 10 सेकेंड में ही हिट और व्यूज मिल जाए। नीचे सुर वाला गीत धीरे खुलता है, इसलिए उसे आज के दौर में 'रिस्की' माना जाता है।

वॉल्यूम-बीट्स को महत्व: बीते दौर में गायक फिल्म के किरदार से पहले गीत के भाव खोजते थे। आज के अधिकतर गाने में एक्टर और उसकी स्क्रीन इमेज का पहले ध्यान रखा जाता है। इस प्रयास में कई बार गायकी पर वॉल्यूम और बीट्स भारी पड़ जाते हैं।

शास्त्रीय प्रशिक्षण की कमी: नीचे और मध्यम सुर में गाना आसान नहीं होता। इसके लिए रियाज, सांस पर नियंत्रण और धैर्य चाहिए होता है, जो आज के गायकों में कम होता जा रहा है।

कभी-कभी सुनाई पड़ते हैं मधुर गीत: अच्छे, मधुर गीत भले ही आज फिल्म संगीत के हाशिए पर चले गए हैं, लेकिन ये पूरी तरह खत्म नहीं हुए हैं। आज भी कुछ मधुर गीत बन रहे हैं, जो बिना शोर किए दिल में उतर जाते हैं। उदाहरण के तौर पर हम आज के दौर के कुछ बेहतरीन सीधे रूह में उतरने वाले गीतों को देख सकते हैं- फिल्म 'तमाशा' के गीत 'अगर तुम साथ हो...'



'ऐ दिल है मुश्किल' का गीत 'चन्ना मेरेया'

जिनके हिसाब से चलता है, उनमें से बड़ी संख्या रील देखने वाले युवाओं की है। पहले 10 सेकेंड में रुकने या स्कॉल करने वाले श्रोता और दर्शक, जिनकी पसंद पर पैसा, प्रमोशन और ट्रेड तय होता है- वे तेज, ऊंचे और तुरंत पकड़ में आने वाले सुर चाहते हैं। मध्यम और नीचे सुर का गीत धीरे खुलता है, दो-तीन बार सुनने पर असर करता है, अकेलापन और ठहराव की मांग करता है। आज के संगीत प्रेमियों और इंटरस्ट्री को गायक से ज्यादा परफॉर्मर चाहिए। लाइव शो, डांस, स्क्रीन प्रेजेंट्स भी मायने रखता है। इन्हीं सब पहलुओं को ध्यान में रखकर आज के गीत-संगीत को रचा जाता है। देखा जाए, तो मामला सीधा-सीधा प्रोफेशनल प्रेशर के साथ ही 'डिमांड एंड सप्लाई' का माना जा सकता है। *